एक्ज़िम बैंक EXIM BANK भारतीय निर्यात-आयात बैंक EXPORT-IMPORT BANK OF INDIA

एक्ज़िमिअस

निर्यात लाभ

दिसंबर 2018
खंड XXXIV अंक IV

इस अंक में

1-3 वर्ष 2018 के लिए भारतीय निर्यात का परिदृश्य
4 अमेरिका-मेक्सिको-कनाडा करार
5 भारत का कृषि निर्यात
6 यूनाइटेड किंगडम के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध
7 बहुपक्षीय विकास बैंकों के साथ व्यवसाय अवसर सेमिनार
8 सफलता की मिसाल: कुमाऊं अर्थक्राफ्ट
9 एक्ज़िम बैंक की ऋण-व्यवस्थाएं
10 तिमाही गतिविधियां
11 स्पेशल रिपोर्ट: एशियाई एक्ज़िम बैंक फोरम - वार्षिक बैठक
12 एक्ज़िम बैंक गतिविधियां
13 चुनिंदा देशों का आर्थिक परिदृश्य
14 मुद्रा की प्रवृत्तियां
15 भारतीय अर्थव्यवस्था के संक्षिप्त आंकड़े
16 व्यापार और भागीदारी अवसर

भारतीय निर्यात-आयात बैंक का तिमाही प्रकाशन
www.eximbankindia.in

प्रधान कार्यालय :
केंद्र एक भवन, 21 वीं मंज़िल,
विश्व व्यापार केन्द्र संकुल,
कफ़ परेड, मुंबई 400 005
Tel.: 022 2217 2600
Email : ccg@eximbankindia.in

वर्ष 2018 के लिए भारतीय निर्यात का परिदृश्य

लंबी स्थिरता और फिर गिरावट के बाद भारतीय निर्यात में उछाल देखा गया है। अप्रैल-अक्टूबर 2018 के दौरान, देश से वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात में 12.8% की अच्छी वृद्धि दर्ज की गई। साथ ही सेवाओं के निर्यात में 24.8% की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। इस अवधि के दौरान पेट्रोलियम उत्पादों, इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, कागज और अन्य संबंधित उत्पादों, खेल संबंधी सामान, प्लास्टिक और रबड़ की वस्तुओं, रसायन और संबंधित उत्पादों, परिवहन उपकरण, तथा अयस्कों और खनिजों जैसे अधिकांश क्षेत्रों में निर्यात में दोहरे अंकों की अच्छी वृद्धि दर्ज की गई **(तालिका-1)**। अप्रैल-अक्टूबर 2018 की अवधि के दौरान रत्न और आभूषण, मूल धातुएं, समुद्री उत्पाद, चमड़ा, पौधारोपण के सामान जैसे चुनिंदा क्षेत्रों के निर्यातों में गिरावट दर्ज की गई।

तालिका 1 – विभिन्न क्षेत्रों से भारतीय निर्यात

क्षेत्र	अप्रैल-अक्टूबर, – मिलियन यूएस डॉलर		वर्ष 2018-19 में वृद्धि का %	वर्ष 2018-19 में शेयर का %
	2017-18	2018-19		
परियोजना वस्तुएं	3.3	10.4	217.0	-
पेट्रोलियम क्रूड एवं उत्पाद	19533.8	28588.5	46.4	15.0
कार्यालय उपकरण	52.7	74.0	40.6	-
कागज और अन्य संबंधित उत्पाद	1454.6	1953.7	34.3	1.0
खेल संबंधी सामान	145.0	193.0	33.1	0.1
इलेक्ट्रॉनिक चीजें	3343.3	4401.1	31.6	2.3
प्लास्टिक एवं रबर की वस्तुएं	4103.0	5368.3	30.8	2.8
मशीनरी	13209.2	16866.7	27.7	8.9
रसायन एवं अन्य संबंधित उत्पाद	20270.9	24816.8	22.4	13.0
परिवहन उपकरण	13173.3	14849.5	12.7	7.8
कुल	**168,642.2**	**190,623.7**	**13.0**	**100**

स्रोत : डीजीसीआई एंड एस; - शून्य / नगण्य

भारत के निर्यात क्षेत्रों का संक्षिप्त विवरण

निर्यात राजस्व में रसायन और संबंधित उत्पादों का 13% योगदान रहा, जो पेट्रोलियम उत्पादों के बाद देश के कुल निर्यातों में सबसे अधिक है। अप्रैल-अक्टूबर 2018 के दौरान उर्वरकों, कार्बनिक रसायनों और ग्रेफाइट, विस्फोटक और अन्य सामान के निर्यात में बड़ी वृद्धि के साथ इस क्षेत्र में 22.4% की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई।

रत्न एवं आभूषण निर्यात मूल्य के मामले में, देश के कुल निर्यातों में 12.7% हिस्से के साथ तीसरा अग्रणी क्षेत्र रहा। हालांकि अप्रैल-अक्टूबर 2018 के दौरान इस क्षेत्र से निर्यातों में 1.6% की गिरावट दर्ज की गई। अप्रैल-अक्टूबर 2018 के दौरान, शिपमेंट की कमी के कारण स्वर्ण पदकों और सिक्कों के निर्यात में निरंतर गिरावट आई। चांदी के आभूषणों का निर्यात भी घटा और निर्यातित माल लौटा दिए जाने के मामलों में (18.9% की वृद्धि) के चलते इस क्षेत्र से निर्यातों में और गिरावट आई। तथापि, वर्ष 2018-19 की तीसरी और चौथी तिमाही के दौरान उत्सवों और विवाहोत्सवों की बहार के चलते खपत में वृद्धि होने से निर्यातों में उछाल आने की उम्मीद है।

अप्रैल-अक्टूबर 2018 के दौरान, परिवहन उपकरणों के व्यापार में 12.7% की वृद्धि बनी रही। रेल परिवहन उपकरण, साइकिल, ऑटो पार्ट्स, मोटर वाहन और ऑटो टायर-ट्यूब का निर्यात बढ़ना इस क्षेत्र में वृद्धि के प्रमुख कारण रहे। मांग

बढ़ने और अनुकूल नीति के कारण इस क्षेत्र में वृद्धि के वर्तमान स्तर के बने रहने की उम्मीद है। ऑटोमोटिव मिशन योजना 2016-26 में भारत को ऑटोमोटिव निर्यात केंद्र बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इसका उद्देश्य इंजीनियरिंग, विनिर्माण तथा वाहनों और ऑटो उपकरणों के निर्यात के मामले में भारत के ऑटोमोटिव उद्योग को अग्रणी बनाना है।

अप्रैल-अक्टूबर 2018 के दौरान कृषि तथा संबंधित उत्पादों में जहां 0.92% की मामूली वृद्धि दर्ज की गई, वहीं बागान सामानों में वर्ष दर वर्ष 9.1% की गिरावट दर्ज की गई। दिसंबर 2018 में नई कृषि निर्यात नीति को मंजूरी मिलने से इन क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन की आशा की जा रही है। यह नीति कृषि क्षेत्र को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए तैयार की गई है। इसका उद्देश्य निर्यातों को बढ़ाते हुए किसानों की आय को दोगुना करना और भारतीय किसानों और कृषि उत्पादों को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में शामिल करना है।

कपड़ा उद्योग उत्पादन, रोजगार और निर्यातों की दृष्टि से भारतीय अर्थव्यवस्था का अहम क्षेत्र है। अप्रैल-अक्टूबर 2018 के दौरान टेक्सटाइल्स खंड से निर्यातों में जहां वर्ष-दर-वर्ष 2.1% की वृद्धि दर्ज की गई, वहीं रेडीमेड गारमेंट और जूट टेक्सटाइल्स जैसे उपखंडों से निर्यातों में गिरावट दर्ज की गई।

अप्रैल-अक्टूबर 2018 के दौरान इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग में 31.6% की वृद्धि दर्ज की गई। भारत के व्यापार घाटे में इस क्षेत्र का हिस्सा लगभग 28% होने के चलते यह वृद्धि उल्लेखनीय है। इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में भी व्यापार घाटे में टेलीकम्यूनिकेशन यंत्रों का हिस्सा 44% है। इस क्षेत्र में क्षमता निर्माण की जरूरत और इस उद्योग के विभिन्न खंडों के दूसरे अहम उद्योगों से संबंधों को देखते हुए भारत सरकार ने इलेक्ट्रॉनिक्स हार्डवेयर विनिर्माण को उच्च प्राथमिकता दी है। यह क्षेत्र मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया दोनों कार्यक्रमों के लिए महत्त्वपूर्ण है। इलेक्ट्रॉनिक्स पर नई मसौदा राष्ट्रीय नीति 2018 भी जनता से विमर्श के लिए जारी की जा चुकी है। इस नीति में इलेक्ट्रॉनिक्स के निर्यात और स्वदेश में उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए इस उद्योग को आकर्षक प्रोत्साहन प्रदान करते हुए इस उद्योग के निर्यात उन्मुखीकरण को बढ़ावा देने पर फोकस किया गया है।

इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में हालिया वृद्धि टेलीकम्यूनिकेशन यंत्रों, कंप्यूटर हार्डवेयर और सहायक उपकरणों जैसे उप खंडों में विस्तार के चलते हुई। अप्रैल-अक्टूबर 2018 के दौरान इलेक्ट्रॉनिक निर्यातों, इलेक्ट्रिकल मशीनरी और उपकरणों के निर्यातों में भी 50% से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई और निर्यात राजस्व में मशीनरी खंड का योगदान 30% रहा।

भारत से निर्यातों के लिए प्रमुख बाजार

अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) भारत से निर्यातों के अग्रणी गंतव्य बने हुए हैं। अप्रैल-अक्टूबर 2018 के दौरान दोनों देशों को भारत से निर्यात क्रमशः 16.1% और 9.3% रहा। भारत के अन्य प्रमुख आयातक देशों में चीन (4.9%), हांगकांग (4.1%), सिंगापुर (3.2%) और यूके (2.8%) शामिल रहे। भारत से कुल निर्यात के 50% से ज्यादा हिस्सा इन सभी देशों को रहा। भारत ने अपने पड़ोसी देशों बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका को माल एवं सेवाओं की आपूर्ति करते हुए खुद को एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय सहयोगी के रूप में स्थापित किया है।

तालिका 2 : भारत के लिए प्रमुख आयातक

अप्रैल-अक्टूबर 2017-18		अप्रैल-अक्टूबर 2018-19	
आयातक	% हिस्सा	आयातक	% हिस्सा
अमेरिका	16.1	अमेरिका	16.1
यूएई	10.1	यूएई	9.3
हांगकांग	5.2	चीन	4.9
चीन	4.0	हांगकांग	4.1
सिंगापुर	3.6	सिंगापुर	3.2
यूके	3.1	यूके	2.8
जर्मनी	2.8	जर्मनी	2.7
बांग्लादेश	2.6	बांग्लादेश	2.7
वियतनाम	2.5	नीदरलैंड	2.5
नेपाल	2.0	नेपाल	2.4

स्रोतः डीजीसीआई एंड एस

निर्यात वृद्धि के कारक

विकसित और विकासशील देशों से भारतीय उत्पादों की मांग और वैश्विक व्यापार में बढ़ोत्तरी के चलते भारत के निर्यातों में वृद्धि दर्ज की गई। एक्ज़िम बैंक का शोध अध्ययन बताता है कि भारत के निर्यातों पर वैश्विक आर्थिक वृद्धि का प्रभाव पड़ता है। वैश्विक जीडीपी विकास दर में 1% की बढ़ोत्तरी या कमी से भारत की निर्यात वृद्धि दर में 3.1% की बढ़ोत्तरी या कमी हो जाती है। इसलिए यह हैरानी की बात नहीं है कि वैश्विक मांग में वृद्धि से भारतीय निर्यातों में भी वृद्धि होती रही है। 2017 के दौरान, एशिया और उत्तरी अमेरिका से आयात की मांग बढ़ने के चलते वैश्विक व्यापार में बीते छह वर्षों की सबसे बड़ी वृद्धि दर्ज की गई। इस मांग का भारतीय निर्यातों पर भी सकारात्मक असर पड़ा और भारतीय निर्यातों का दो तिहाई हिस्सा इन्हीं दोनों देशों को रहा। वैश्विक जीडीपी में 2018 के दौरान 3% की बढ़ोत्तरी हुई। इससे भारतीय निर्यातों में भी अच्छा उछाल आया।

भारतीय रुपये में आई गिरावट भी 2018 के दौरान निर्यातों में वृद्धि की एक वजह रही। एक्ज़िम बैंक का विश्लेषण बताता है कि रुपये में गिरावट का अमेरिका के निर्यातों पर सकारात्मक असर रहा, जो भारत के लिए एक प्रमुख आयातक है। यह असर छोटी और लंबी दोनों अवधियों के लिए रहा। रुपये में 1% की गिरावट से अमेरिका को भारतीय निर्यातों में 0.3% की बढ़ोत्तरी होती है। भारत के दूसरे प्रमुख निर्यात क्षेत्र यूरो एशिया के मामले में, एक यूनिट की गिरावट (विदेशी मुद्रा की एक यूनिट की कीमत, स्थानीय मुद्रा की एक यूनिट में दी गई है) से निर्यातों में 3.4% की बढ़ोत्तरी होती है।

शिपिंग और लॉजिस्टिक्स में तटीय नौवहन सुधारों के लागू होने से भी भारत के निर्यातों पर सकारात्मक असर पड़ा है। मई 2018 में लाई गई तटीय व्यापार में छूट संबंधी नीति के अंतर्गत तटीय कार्गो संबंधी नियमों में नरमी बरती गई है, जो पहले केवल भारतीय जहाजों का ही अधिकार क्षेत्र था। इससे कोलंबो, सिंगापुर जैसे बंदरगाह केंद्रों के बजाय भारत में पोतांतरण (ट्रांसशिपमेंट) की संख्या बढ़ गई। सरकार के सागरमाला कार्यक्रम के लागू होने से भी बंदरगाहों के आधुनिकीकरण पोर्ट लिंकेज बढ़ाने तथा तटीय विकास के जरिए भारत के शिपिंग और लॉजिस्टिक्स में बढ़ोत्तरी की उम्मीद है।

इसके अतिरिक्त, एक्ज़िम बैंक के शोध अध्ययन में यह भी कहा गया है कि भारत के करीब एक-चौथाई निर्यात, मूल्य संवेदनशील हैं। 2018 के दौरान वस्तुओं की बढ़ी कीमतों के चलते इस मूल्य संवेदनशील क्षेत्र में निर्यातों में सुधार की उम्मीद है। अक्टूबर 2018 के दौरान कच्चे तेल की कीमतें 86 यूएस डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई थीं। हालांकि अगले महीने इन कीमतों में गिरावट आई। लेकिन अप्रैल-अक्टूबर 2018 के दौरान कच्चे तेल (ब्रेन्ट) की कीमतों में वर्ष-दर-वर्ष औसतन 44.6% की बढ़ोत्तरी दर्ज की गई। कच्चे तेल की

ऊंची कीमतों के कारण पेट्रोलियम उत्पादों जैसे क्षेत्र में निर्यात मूल्य में भी बढ़ोत्तरी हुई। आंकड़े बताते हैं कि अप्रैल-अक्टूबर 2018 के दौरान भारत के पेट्रोलियम उत्पादों के निर्यात में वर्ष-दर-वर्ष औसतन 45.8% की बढ़ोत्तरी हुई।

चूंकि अधिकांश निर्यात क्षेत्रों पर मूल्य-प्रतिस्पर्धा का सीमित असर पड़ता है, इसलिए भारत ने सावधानीपूर्वक ऐसे क्षेत्रों में निर्यात बढ़ाने का प्रयास किया जहां मूल्यों में प्रतिस्पर्धात्मकता का असर ज्यादा न हो। कुछ प्रमुख सुधारों के जरिए निर्यात वृद्धि में आने वाली बाधाओं को दूर करने के प्रयास किए गए। इनका असर विश्व बैंक द्वारा जारी व्यापार सुगमता रिपोर्ट 2018 में भारत की व्यापार सुगमता रैंकिंग में हुए सुधार पर भी दिखाई दिया। भारत 190 देशों की इस सूची में 23 पायदान ऊपर आया। इस सूची में 2017 में भारत 100वें पायदान पर था और 2018 में 77वें स्थान पर रहा।

निर्यात वृद्धि में चुनौतियां

वर्ष 2018 में जहां वैश्विक आयातों की मांग बढ़ने, भारतीय रुपये में गिरावट आने और वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोत्तरी होने से भारत की निर्यात वृद्धि को सहारा मिला, वहीं कुछ नई चुनौतियां भी उभरकर आईं। वैश्विक टैरिफ युद्धों से वैश्विक व्यापार में विस्तार की गति धीमी पड़ी और इसका असर भारत की निर्यात वृद्धि पर भी पड़ने की संभावना है। इकनॉमिस्ट इंटेलीजेंस यूनिट के अनुसार, टैरिफ युद्धों और व्यापार विवादों के बढ़ने से 2019-22 के दौरान वैश्विक व्यापार वृद्धि दर के एक साल में औसतन 3.5% रहने के आसार हैं। जबकि 2017 में वृद्धि दर 5.3% रही थी। वैश्विक वृद्धि में यह मंदी भारत के निर्यातों को भी प्रभावित कर सकती है। भारतीय निर्यातों पर वैश्विक आर्थिक परिदृश्य का और विशेष रूप से अमेरिका और चीन के आर्थिक परिदृश्य का काफी असर पड़ता है। टैरिफ युद्ध के चलते अमेरिका और चीन में मंद पड़ा व्यापार वैश्विक आर्थिक परिप्रेक्ष्यों को बुरी तरह प्रभावित करेगा और भारतीय निर्यातों पर भी इसका प्रतिकूल असर पड़ेगा।

लेकिन वैश्विक टैरिफ युद्ध संरक्षणवाद के ही विभिन्न रूपों में से एक है, जिसका निर्यातों पर प्रतिकूल असर पड़ता है। भारत से निर्यातों को दुनियाभर में, विशेष रूप से विकसित देशों में कई नॉन-टैरिफ बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, व्यापार करार भी भारत के लिए लगातार अधिक महत्त्वपूर्ण होते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका-मेक्सिको-कनाडा करार को ही लीजिए। यह करार ऑटोमोबाइल क्षेत्र में 2023 तक 40-45% सामग्री 16 यूएस डॉलर प्रतिघंटा कमाने वाले कामगारों द्वारा बनाए जाने को अनिवार्य करता है। कार कंपनियों को एशिया से सस्ते पुर्जे लेने के बजाय उत्तरी अमेरिका में विनिर्मित पुर्जे इस्तेमाल करने होंगे। इसका असर भारत के परिवहन उपकरणों के निर्यात पर भी पड़ेगा, जो फिलहाल भारत के कुल निर्यातों का 8% है।

भारत सरकार भारत से वस्तु निर्यात योजना जैसे अपने विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए घरेलू विनिर्माताओं को निर्यात के लिए प्रोत्साहित करती है। कुछ निर्यात प्रोत्साहनों को अमेरिकी सरकार द्वारा विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में चुनौती दी गई है। इन चुनौतियों को देखते हुए, भारत सरकार के लिए निर्यातों को प्रोत्साहन देने वाली ऐसी वैकल्पिक योजनाएं रखना लाजिमी होगा, जो डब्ल्यूटीओ के दिशानिर्देशों के अनुरूप हों।

हालिया दौर में कृषि और संबंधित क्षेत्र में मांग से अधिक उत्पादन हुआ है और इससे निर्यात क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। लेकिन कृषि उत्पादन, भंडारण, वितरण, खाद्य सुरक्षा और मूल्य निर्धारण संबंधी नीतियों के चलते भारत के कृषि निर्यातों को बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। उदाहरण के लिए, न्यूनतम समर्थन मूल्य से संबंधित नीतियों को ही लीजिए। इस नीति के चलते चीनी, गेहूं चावल आदि जैसे कृषि उत्पादों की घरेलू कीमतें अंतरराष्ट्रीय कीमतों की तुलना में बढ़ गईं और भारत के ये उत्पाद निर्यात की दृष्टि से मूल्य प्रतिस्पर्धा में पिछड़ गए। हालांकि संरक्षणवाद का समय पर उपयोग कर लेने से कृषि क्षेत्र को सहयोग मिला, लेकिन प्रतिबंधात्मक नीतियों से जैविक खेती और कृषि प्रसंस्करण की संभावनाएं सीमित हो गईं। इन चुनौतियों के मद्देनजर नई कृषि निर्यात नीति यह सुनिश्चित करती है कि प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद और सभी प्रकार के जैविक उत्पादों को किसी भी प्रकार के निर्यात प्रतिबंधों के दायरे में नहीं लाया जाएगा। तब भी जब जैविक कृषि उत्पाद अथवा नॉन-ऑर्गेनिक कृषि उत्पाद को किसी प्रकार के निर्यात प्रतिबंध के दायरे में रखा जाए।

कच्चे तेल की वैश्विक कीमतों का भारत के निर्यातों पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है। अमेरिका, सऊदी अरब और रूस में उत्पादन पढ़ने और ईरान से कच्चे तेल का आयात करने वाले देशों को छूट और कच्चे तेल की मांग में कमी के चलते नवंबर 2018 में ये कीमतें गिरकर 54 यूएस डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गईं। कच्चे तेल की कीमतों में आई यह गिरावट पेट्रोलियम उत्पादों के निर्यात मूल्य को भी प्रभावित करेगी, जो देश से सबसे अधिक निर्यातित उत्पादों में से एक हैं।

इन व्यवस्थागत और आवर्ती कारकों के अतिरिक्त, इस वर्ष निर्यातकों द्वारा इस वर्ष वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) और वर्तमान वित्तीय परिवेश में निर्यातों के लिए किफायती दरों पर ऋण की उपलब्धता जैसी चुनौतियों का सामना भी निर्यातकों को करना पड़ा। निर्यात ऋण संबंधी डाटा बताता है कि निर्यातकों को ऋण में मार्च 2017 के बाद से लगातार कमी आई है। 'इम्पैक्ट ऑफ बैंकिंग मिसएप्रोप्रिएशन ऑन ट्रेड एंड इंडस्ट्री' शीर्षक वाली एक रिपोर्ट के अनुसार, निर्यात ऋण प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा है और वर्ष 2017-18 के अंत में इस ऋण में 24.4% की गिरावट आई। प्राथमिक क्षेत्र को ऋण के प्रतिशत के रूप में देखा जाए तो यह केवल 1.74% रहा। माल और सेवाओं के निर्यात पर आईजीएसटी के रिफंड में देरी के चलते भी निर्यात-उन्मुख व्यवसायों, विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र को ऋण की सीमित उपलब्धता रही। इससे छोटे व्यवसायों के निर्यात प्रभावित हुए।

निष्कर्ष

एक्ज़िम बैंक के पूर्वानुमानों के अनुसार, 2018-19 की तीसरी तिमाही में निर्यात बढ़ सकता है और 7% की वृद्धि दर दर्ज की जा सकती है। लेकिन सालभर तक गिरावट का सामना करने के बाद भारत के निर्यातों में यह उछाल वैश्विक टैरिफ युद्ध, भू-राजनीतिक घटनाक्रम और कच्चे तेल की कीमतों पर पड़ने वाले असर के चलते प्रभावित हो सकता है। तथापि, जीएसटी व्यवस्था, दिवाला और दिवालियापन संहिता, 2016, डिजिटल इंडिया मुहिम, मेक इन इंडिया और भारतमाला परियोजना तथा सागरमाला जैसे बुनियादी ढांचागत कार्यक्रमों के चलते घरेलू परिवेश अनुकूल रहने से देश को निर्यात वृद्धि के पथ पर अग्रसर होने में मदद मिलेगी।

4 अमेरिका–मेक्सिको–कनाडा करार

पृष्ठभूमि

नाफ्टा (उत्तरी अमेरिका मुक्त व्यापार करार) तीन देशों के बीच एक करार है, जिसकी 'पटकथा' कनाडा, मेक्सिको और अमेरिका की सरकारों ने मिलकर लिखी है। यह करार जनवरी 1994 में लागू हुआ था। नाफ्टा देशों के बीच जो व्यापार 2009 में 0.8 ट्रिलियन यूएस डॉलर का था, वह 2017 में 1.2 ट्रिलियन यूएस डॉलर का हो गया। इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि नाफ्टा देशों से दुनिया को निर्यात नाफ्टा देशों के बीच आपसी निर्यात की तुलना में दोगुना हो गया। इस अवधि के दौरान औसत वृद्धि दर 6% से ज्यादा रही। वैश्विक निर्यातों में 2017 तक नाफ्टा देशों का योगदान 13.5% रहा।

नाफ्टा के बीच वार्ताओं का दौर

नाफ्टा देशों के बीच लंबी वार्ताओं का दौर चला। आखिरकार 30 सितंबर, 2018 को तीनों देशों में मौजूदा करार को अपडेट करने और पूर्व स्थिति को सुधारने के लिए सहमति बनी। इस तरह तीनों अर्थव्यवस्थाओं के बीच एक नई डील ने आकार लिया और 30 नवंबर, 2018 को इस नए करार पर हस्ताक्षर हुए। यह नया करार अमेरिका–मेक्सिको–कनाडा करार के नाम से जाना गया। इसमें तीनों ही देशों के कुछ ऐसे उद्योगों के लिए पहले के प्रावधान काफी बदल गए। यह नया त्रिपक्षीय समझौता 16 वर्षों के लिए हुआ है। हर छह साल में एक बार इसकी समीक्षा की जाएगी। उस समीक्षा में तीनों देश करार को आगे बढ़ाने का फैसला ले सकते हैं या यदि कोई अनियमितता आती है तो उसे ठीक करने के लिए नए सिरे से वार्ता शुरू कर सकते हैं। हालांकि, तीनों देशों को यह अधिकार पहले की तरह अब भी रखा गया है कि तीनों में से कोई भी देश छह महीने का नोटिस देकर करार से बाहर निकल सकता है।

ऑटोमोटिव उद्योग

इस नए करार से जिन उद्योगों को लाभ मिलने की उम्मीद है, उनमें से एक है ऑटोमोटिव उद्योग। इससे उत्तरी अमेरिकी क्षेत्र में निवेशों को प्रोत्साहन मिलेगा। वर्ष 2020 से नाफ्टा क्षेत्र के भीतर जीरो टैरिफ पर व्यापार किया जा सकता है, बशर्ते कि किसी कार या ट्रक के कम से कम 75% पुर्जे कनाडा, मेक्सिको या अमेरिका में से किसी देश में बने हों। पहले यह शर्त 62.5% पुर्जों की थी। 2020 से यह नियम भी लागू हो जाएगा कि कारों या ट्रकों पर कम से कम 30% काम 16 यूएस डॉलर प्रति घंटा कमाने वाले कामगारों द्वारा किया गया हो। 2023 तक कारों के लिए इसे धीरे-धीरे बढ़ाकर 40% कर दिया जाएगा[1]।

दुनिया को नाफ्टा से निर्यात और वैश्विक निर्यात

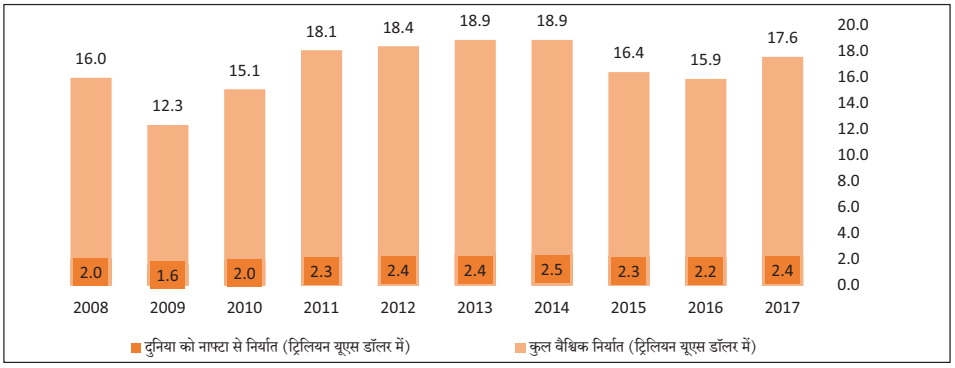

स्रोतः आईटीसी ट्रेड मैप

कनाडा का डेयरी उद्योग

कनाडाई डेयरी किसानों को दिवालिया होने से बचाने के लिए पहले कनाडा की सरकार ने डेयरी उत्पादों के उत्पादन और आयात पर कुछ प्रतिबंध लगा दिए थे। वार्ताओं के दौर के बाद, कनाडा ने अमेरिका के उत्पादकों के लिए अपने बाजार को और अधिक खोल दिया है। अब यह नया करार अमेरिकी उत्पादकों / डेयरी किसानों को कनाडा के घरेलू बाजार में 3.6% का शेयर देगा।

इन वार्ताओं में कनाडा को एक बड़ा फायदा यह रहा कि नाफ्टा करार का अध्याय 19 यथावत बना रहा। यह अध्याय कनाडा, मेक्सिको और अमेरिका तीनों को एक-दूसरे की एंटी-डंपिंग और काउंटरवेलिंग ड्यूटी को प्रत्येक देश के प्रतिनिधियों के एक पैनल के समक्ष चुनौती देने का अधिकार देता है। यह तरीका अमेरिकी अदालत में चुनौती देने की प्रक्रिया से सामान्य रूप से कहीं अधिक सरल है।

इस नए करार के विश्व के लिए मायने

यह नया करार भविष्य में अमेरिका द्वारा किए जाने वाले तमाम व्यापार करारों के लिए एक टेम्प्लेट के रूप में उभर सकता है। इसमें अमेरिका प्रमुख व्यापार भागीदारों के साथ व्यापार संबंधों को पुनर्संतुलित करने पर फोकस किया जाएगा। अमेरिका इस नए करार का इस्तेमाल भविष्य में विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में होने वाली अन्य वार्ताओं के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कर सकता है। इसके अतिरिक्त, इस करार में स्थानीय सामग्री के इस्तेमाल संबंधी कड़े नियम दुनिया भर में वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करेंगे। ऑटोमोबाइल क्षेत्र के मामले में फायदा इस बात पर निर्भर करेगा कि स्टील और एल्यूमीनियम की कीमतें इस क्षेत्र में उत्पादन को किस तरीके से प्रभावित करती हैं। इसका असर भारत सहित कई एशियाई देशों पर भी पड़ सकता है, जो अमेरिका के नेतृत्व वाली ऑटोमोबाइल आपूर्ति श्रृंखलाओं से जुड़ी हैं।

भारत के लिए आगे की राह

वर्तमान प्रशासन के अंतर्गत अमेरिका की व्यापार नीति में एक परिवर्तन आया है। इसमें बहुपक्षीयवाद से द्विपक्षीयवाद पर फोकस हो गया है। अब जो करार किए जा रहे हैं, उनमें अमेरिका के अपने आर्थिक हितों का ध्यान रखा जा रहा है। भारत जैसे देशों के लिए न सिर्फ इस नए करार के ढांचे और प्रभावों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना और अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है, बल्कि अमेरिका द्वारा निकट भविष्य में किए जाने वाले समझौतों का विश्लेषण करना भी अहम हो गया है।

भारत अपने द्विपक्षीय व्यापार संबंधी विषयों को लेकर दोनों देशों के बीच आपसी चिंताओं के एक 'ट्रेड पैकेज' के अंतर्गत अमेरिका के साथ चर्चा कर रहा है। लेकिन इसके आसार कम ही हैं कि किसी व्यापार समझौते से भारत को लाभ मिलेगा, क्योंकि अमेरिका में ज्यादातर वस्तुओं पर टैरिफ पहले ही कम हैं और उन्हें और घटाने की गुंजाइश नहीं बचती है। वस्तुओं पर भारत के औसत टैरिफ 13%–14% के बीच हैं, जबकि अमेरिका के टैरिफ 4% से कम हैं। इसमें भी टैरिफ दरें घटाने की गुंजाइश भारत के लिए ही बचती है। यदि वार्ताओं के दौरान अमेरिका की ओर से यह मुद्दा उछाला गया तो भारत के लिए यह चुनौती बन सकता है।

इसलिए, भारतीय नीति निर्माताओं और व्यापार वार्ताकारों को अमेरिका के साथ बहुत सावधानीपूर्वक किसी ऐसे व्यापार समझौते पर पहुंचना होगा, जो दोनों देशों के व्यावसायिक हितों को पूरा करता हो। इसके साथ ही हिंद–प्रशांत क्षेत्र में भू–रणनीतिक हितों को भी ध्यान में रखने की जरूरत है।

[1]अमेरिका में जून 2018 तक ऑटो विनिर्माण में संलग्न कामगारों की कमाई औसतन 22 यूएस डॉलर प्रतिघंटा से ज्यादा थी।

संक्षिप्त विवरण

भारत कृषि भूमि वाला दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है, जहां 157.35 मिलियन हेक्येटर कृषि भूमि है। देश की लगभग 55% आबादी खेती करती है। दूसरे अग्रिम अनुमानों के अनुसार, 2017-18 में भारत में कुल अनाज उत्पादन 277.5 मिलियन टन के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंचने का आकलन किया गया है। 2017-18 में देश में चावल और गेहूं उत्पादन क्रमशः 111.01 मिलियन टन और 97.11 मिलियन टन पहुंचने की उम्मीद है।

भारत दूध, मसालों और जूट का दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक रहा है। वहीं, गेहूं और चावल उत्पादन में चीन के बाद भारत का दूसरा स्थान रहा है। भारत फलों और सब्जियों का भी दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। फलों में भारत जहां केले, पपीता, आम और अमरूदों का अग्रणी उत्पादक है, वहीं सब्जियों में आलू, हरे मटर, टमाटर, बंद गोभी और फूल गोभी का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।

ध्यान देने वाली बात यह है कि भारत की खाद्य सुरक्षा स्थिति में बड़ा परिवर्तन आया है और यह कुछ दशकों में खाद्य की न्यूनता से खाद्य सरप्लस वाला देश बन गया है। वर्ष 1950-51 में कुल खाद्यान्न उत्पादन जहां 50.8 मिलियन टन था, वहीं 2017-18 में यह बढ़कर 277.5 मिलियन टन हो गया है।

कृषि व्यापार

एक तरफ, 2017 में वैश्विक कृषि निर्यात में मामूली बढ़ोत्तरी हुई। 2013 में यह 1471 अरब यूएस डॉलर का था और 2017 में मामूली बढ़त के साथ 1488 अरब यूएस डॉलर का रहा। इस अवधि के दौरान इसमें 0.5% की मामूली औसत वार्षिक वृद्धि दर (एएजीआर) दर्ज की गई। 2017 में प्रमुख वैश्विक निर्यातकों में अमेरिका (9.5%), नीदरलैंड (6.4%), जर्मनी (5.5%), ब्राजील (5.2%) और चीन (4.9%) शामिल रहे।

वहीं दूसरी तरफ, 2017 में भारत के कृषि निर्यात में गिरावट दर्ज की गई। 2013 में 41.7 अरब यूएस डॉलर का था और 2017 में गिरकर 34.7 अरब यूएस डॉलर का रह गया। इस अवधि के दौरान इसमें (-)3.6% की एएजीआर दर्ज की गई। यूं तो भारत कृषि व्यापार के मामले में लंबे समय तक व्यापार सरप्लस वाला देश रहा है। लेकिन पिछले 5 वर्षों के दौरान भारत के व्यापार सरप्लस में भी गिरावट आई है और यह 2013 के 24.5 अरब यूएस डॉलर से गिरकर 2017 में 9.5 अरब यूएस डॉलर रह गया

कृषि उत्पादों में भारत का व्यापार संतुलन (अरब यूएस डॉलर)

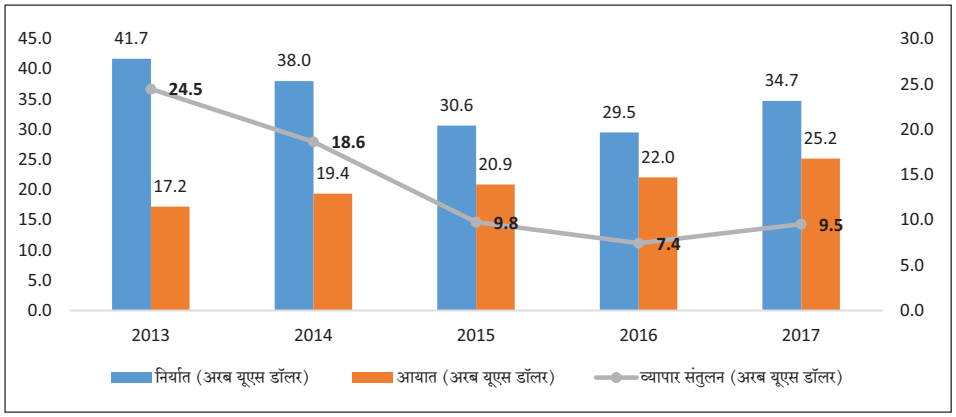

स्रोतः आईटीसी ट्रेड मैप

है। वर्तमान में, वैश्विक कृषि निर्यातों में भारत का हिस्सा 2.3% है, जो 2008 में 1.6% था।

भारत से कृषि निर्यातों में अलग-अलग तरह के उत्पाद शामिल रहे हैं। 2017 में भारत से कुल कृषि निर्यातों में 21.2% हिस्से के साथ अनाज (एचएस कोड-10) का सबसे बड़ा योगदान रहा है। इसके बाद 19.2% हिस्से के साथ समुद्री उत्पादों (एचएस कोड-03) और 12.4% हिस्से के साथ मांस (एचएस कोड-02) का स्थान रहा। 2017 में भारत से कृषि उत्पादों के प्रमुख आयातकों में वियतनाम (14.8%), अमेरिका (13.3%), यूएई (5.7%), सऊदी अरब (4.2%) और ईरान (4.2%) शामिल रहे।

भारत के कृषि निर्यातों में जहां पिछले 5 वर्षों के दौरान जहां ऋणात्मक वृद्धि दर दर्ज की गई, वहीं 2013-2017 के दौरान कृषि आयातों में 10% की वृद्धि दर्ज की गई। कृषि आयात 2013 के 17.2 अरब यूएस डॉलर से बढ़कर 2017 में 25.2 अरब यूएस डॉलर का हो गया।

भारत द्वारा 2017 में आयात किए गए कृषि उत्पादों में लगभग 47.2% हिस्सा पशु और वनस्पति वसा और तेलों (एचएस कोड-15) का रहा। इसके बाद 15.7% हिस्से के साथ खाद्य सब्जियों (एचएस कोड-07) और 16.6% हिस्से के साथ खाद्य फलों (एचएस कोड-08) का स्थान रहा। 2017 में भारत को इनका निर्यात करने वाले प्रमुख देशों में इंडोनेशिया (21.7%), यूक्रेन (9.9%), अर्जेंटीना (9.3%), ऑस्ट्रेलिया (8.2%) और मलेशिया (6.3%) शामिल रहे।

कृषि निर्यात नीति

भारत सरकार ने 2018 में कृषि निर्यात नीति पेश की। इस नीति को मंजूरी देने के अतिरिक्त, सरकार ने केंद्र में एक मॉनिटरिंग फ्रेमवर्क की स्थापना को भी मंजूरी प्रदान की और वाणिज्य विभाग को इसका नोडल विभाग बनाया। नीति के क्रियान्वयन को देखने के लिए इसमें विभिन्न मंत्रालयों / विभागों और एजेंसियों से प्रतिनिधित्व रहेगा और संबंधित राज्य सरकारों के प्रतिनिधि भी शामिल रहेंगे।

उद्देश्य और विजन

- राष्ट्रीय कृषि निर्यात नीति वर्ष 2022 तक किसानों की आय बढ़ाकर दोगुनी करने तथा कृषि निर्यात को मौजूदा 30 अरब डॉलर से बढ़ाकर 60 अरब डॉलर तक पहुंचाने के लक्ष्य के अनुरूप बनाई गई है।
- जल्दी खराब हो जाने वाले कृषि उत्पादों को विभिन्न तरीकों से इस्तेमाल करने लायक बनाकर उनका मूल्य संवर्धन करना।
- स्वदेशी, जैविक, स्थानीय प्रजाति, पारंपरिक और गैर-पारंपरिक कृषि उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देना।
- व्यापार के रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर करते हुए कृषि उत्पादों की बाजार तक आसान पहुंच बनाने के लिए एक संस्थागत प्रणाली बनाना तथा उत्पादों के पादप-स्वच्छता (फायटोसैनिटरी) मामलों को निपटाना।
- शीर्ष 10 कृषि उत्पाद निर्यातक देशों में स्थान बनाना तथा वैश्विक कृषि निर्यात के क्षेत्र में भारत की हिस्सेदारी को बढ़ाते हुए जल्द ही दोगुना करना।
- एकीकृत कमोडिटी फोकस वैल्यू चेन और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए निर्यात केंद्रित क्लस्टरों पर ध्यान केंद्रित करना।

6 यूनाइटेड किंगडम के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध

भारत-यूनाइटेड किंगडम द्विपक्षीय संबंध समय के साथ निरन्तर मजबूत होते रहे हैं। दोनों देशों के बीच नियमित रूप से द्विपक्षीय दौरे और उच्च स्तरीय वार्ताएं भी होती रही हैं। भारत और यूके में द्विपक्षीय संवाद को बनाए रखने के लिए कई चैनल हैं, जिनके जरिए व्यापार, निवेश, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, रक्षा आदि कई क्षेत्रों को कवर कर लिया जाता है। भारत-यूके संयुक्त आर्थिक एवं व्यापार समिति, आर्थिक और वित्तीय संवाद और भारत-यूके वित्तीय भागीदारी आदि प्रमुख संस्थागत संवाद हैं, जो दोनों देशों के बीच आर्थिक-वाणिज्यिक संबंधों की दिशा तय करते हैं।

भारत और यूके के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2000-01 के 7.1 अरब यूएस डॉलर से दोगुना होकर 2017-18 में 14.5 अरब यूएस डॉलर का हो गया। 2013-14 के दौरान 15.8 अरब यूएस डॉलर के साथ यह अपने उच्चतम स्तर पर रहा। यूके भारत का प्रमुख व्यापार भागीदार है। 2017-18 के दौरान यह भारत का छठा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य और 19वां सबसे बड़ा आयात स्रोत रहा।

यूके को भारत का निर्यात 2016-17 के 8.5 अरब यूएस डॉलर से बढ़कर 2017-18 में 9.7 अरब यूएस डॉलर हो गया और इसमें 13.6% की बढ़ोत्तरी दर्ज की गई। भारत से दुनिया को कुल निर्यात का 3.2% यूके को ही रहा। इस बीच, यूके से भारत का आयात भी 2016-17 के 3.7 अरब यूएस डॉलर से बढ़कर 2017-18 में 4.8 अरब यूएस डॉलर का हो गया। 2017-18 के दौरान भारत के कुल आयातों का 1.0% यूके से ही रहा।

भारत से यूके को 2017-18 के दौरान निर्यात प्रमुख वस्तुओं में मशीनरी और यांत्रिक उपकरण शामिल रहे, जो कुल निर्यातों का 10.5% रहा। अन्य प्रमुख निर्यातित वस्तुओं में अन्य के साथ-साथ बिना बुने एपैरल और कपड़ा (9%), बुने हुए और क्रोशिया किए वस्त्र और परिधान (8.7%), मोती और कीमती रत्न (7.3%), फार्मास्युटिकल उत्पाद (4.8%) और रेलवे तथा ट्रामवे के अतिरिक्त अन्य वाहन (4.6%) शामिल रहे।

यूके से 2017-18 में भारत द्वारा आयातित प्रमुख वस्तुओं में मोती और कीमती रत्न शामिल रहे, जिनका हिस्सा यूके से भारत के कुल आयातों का 19.2% रहा। इसके बाद (14.8%) हिस्से के साथ मशीनरी और यांत्रिक उपकरणों, (7.3%) हिस्से के साथ एल्यूमीनियम और इसकी वस्तुओं, (7.1%) हिस्से के साथ इलेक्ट्रिकल मशीनरी और उपकरणों तथा (6.6%) हिस्से के साथ ऑप्टिकल, फोटोग्राफिक और टेक्निकल उपकरणों का स्थान रहा। यूके के साथ व्यापार में भारत ने पिछले दस वर्षों से व्यापार सरप्लस बनाए रखा है। 2017-18 में यह सरप्लस 4.9 अरब यूएस डॉलर के साथ 2016-17 के बराबर ही बना रहा।

निवेश की बात की जाए तो यूके, भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का चौथा सबसे बड़ा स्रोत है। अप्रैल (2000 से जून 2018 के दौरान) यूके से भारत को कुल एफडीआई प्रवाह 26 अरब यूएस डॉलर का रहा, जो भारत को कुल एफडीआई प्रवाह का 7% रहा। यूके से एफडीआई प्राप्त करने वाले प्रमुख क्षेत्र पेट्रोलियम, बंदरगाह, सेवाएं, सड़क और हाईवे तथा कंप्यूटर सॉफ्टवेयर रहे। भारत में उपस्थित यूके की कुछ प्रमुख कंपनियों में अविवा, ब्रिटिश टेलीकॉम, ब्रिटिश पेट्रोलियम, बार्कलेज, रायटर्स, केयर्न एनर्जी, यूनिलिवर आदि शामिल हैं।

इस बीच, भारत यूके में तीसरा सबसे बड़ा निवेश बना रहा और दूसरा सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय रोजगार सृजनकर्ता के रूप में उभरा। यूके में भारतीय कंपनियों ने 1,10,000 से ज्यादा रोजगारों का सृजन किया। संयुक्त उद्यमों और इक्विटी, ऋण और जारी गारंटियों सहित पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनियों में यूके में भारतीय एफडीआई प्रवाह अप्रैल 1996 से नवंबर 2018 के दौरान 16.8 अरब यूएस डॉलर का रहा। यूके में भारतीय निवेश मुख्यतः आईसीटी, फार्मास्युटिकल्स और रसायन क्षेत्रों में रहा। यूके में करीब 800 भारतीय कंपनियां हैं। इनमें से यूके में टाटा निजी क्षेत्र की सबसे बड़ी रोजगार प्रदाता कंपनी है। यूके में स्थित इन 800 भारतीय और भारत केंद्रित कंपनियों में से करीब 10% लंदन स्टॉक एक्सचेंज में लिस्टेड हैं। दोनों देशों के बीच रक्षा, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे अन्य क्षेत्रों में भी सहयोग है और सांस्कृतिक संबंध भी मजबूत हैं।

यूनाइटेड किंगडम के साथ भारत का द्विपक्षीय व्यापार

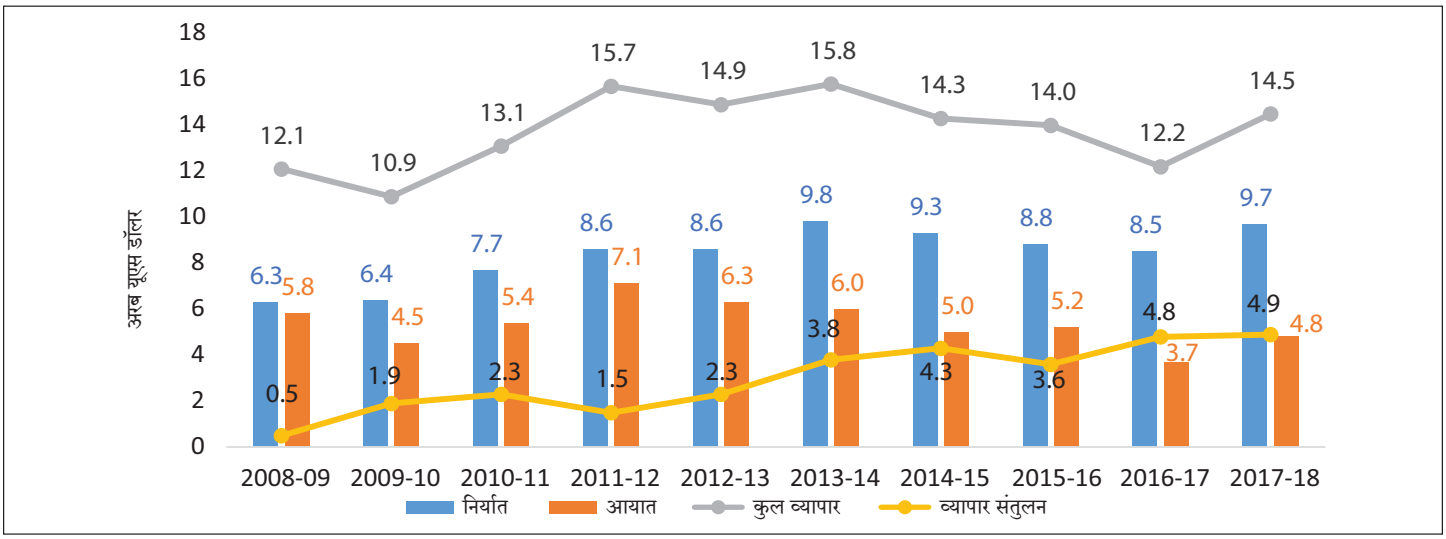

स्रोतः वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

बहुपक्षीय विकास बैंकों के साथ व्यवसाय अवसर सेमिनार

एक्ज़िम बैंक ने विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक (एडीबी) और एशियन इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक (एआईआईबी) जैसी बहुपक्षीय संस्थाओं के साथ अपने संस्थागत संबंधों का मजबूत नेटवर्क बनाया है। यह नेटवर्क बीतते समय के साथ विकसित और सुदृढ़ होता रहा है। बैंक इस प्रक्रिया में ऐसी बहुपक्षीय एजेंसियों के साथ मिलकर नियमित अंतराल पर व्यवसाय अवसरों पर श्रृंखलाबद्ध सेमिनारों का आयोजन करता रहा है।

नवंबर 2018 में, एक्ज़िम बैंक द्वारा ऐसे दो सेमिनारों का आयोजन किया गया। एक सेमिनार विश्व बैंक, एडीबी तथा एआईआईबी के साथ मिलकर नई दिल्ली तथा दूसरा, एडीबी के साथ मिलकर बेंगलूरु में आयोजित किया गया।

विश्व बैंक ऋणों, अनुदानों और तकनीकी सहयोग के जरिए दुनिया भर में, विशेष रूप से विकासशील देशों में विभिन्न क्षेत्रों की परियोजनाओं के लिए सहयोग प्रदान करता रहा है। विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं में टर्नकी कॉन्ट्रैक्टरों, आपूर्तिकर्ताओं, निर्माण कंपनियों और परामर्शदाताओं के लिए आकर्षक व्यवसाय अवसर होते हैं। विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं के लिए की जाने वाली खरीदों की बोलियों में भारतीय कंपनियां हिस्सा लेती रही हैं और इसमें उन्हें उल्लेखनीय सफलता मिली है। नई दिल्ली में हुआ सेमिनार भी ऐसे ही उद्देश्य से आयोजित किया गया था कि कॉन्ट्रैक्टरों को उन तमाम प्रक्रियाओं की जानकारी मिल सके, जिनसे किसी किसी परियोजना का कॉन्ट्रैक्ट हासिल करने के लिए उन्हें गुजरना पड़ता है। इसमें ऊर्जा, परिवहन, जल आपूर्ति और स्वच्छता जैसे विभिन्न क्षेत्रों को कवर करने का प्रयास किया गया था। सेमिनार में विभिन्न क्षेत्रों में बहुपक्षीय एजेंसियों से वित्तपोषित परियोजनाओं में आगामी व्यवसाय अवसरों पर भी चर्चा की गई। साथ ही इन एजेंसियों द्वारा अपनाए जाने वाले प्रोक्योरमेंट फ्रेमवर्क के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी गई।

विश्व बैंक की तरह एशियाई विकास बैंक (एडीबी) एशियाई देशों में बुनियादी ढांचागत स्थिति में सुधार के लिए क्षेत्रीय स्तर पर अहम भूमिका निभा रहा है। एडीबी के निजी क्षेत्र के परिचालनों ने 2017 में परियोजनाओं में बेहतर सफलता दर के साथ अच्छा प्रदर्शन किया। एडीबी ने विभिन्न क्षेत्रों में 8.2 अरब यूएस डॉलर से अधिक के निवेशों में सहयोग प्रदान किया। एडीबी के साथ मिलकर बेंगलूरु में किए गए सेमिनार में भी फिक्की, बीएआई, फियो और एनएचबीएफ जैसी महत्त्वपूर्ण संस्थाएं शामिल रहीं। सेमिनार के दौरान, ''तटीय सुरक्षा और प्रबंधन निवेश कार्यक्रम'' और ''केरल में प्रारंभिक शिक्षा के बाद कौशल संवर्धन कार्यक्रम में सहयोग'' जैसी परियोजनाओं पर चर्चा की गई। साथ ही एडीबी की वेबसाइट के जरिए कंट्री ऑपरेशंस बिजनेस प्लान, प्रोक्योरमेंट प्लान और परामर्शी सेवाओं की नियुक्ति संबंधी नोटिस आदि तक पहुंचने के लिए डेमो भी दिया गया, ताकि परियोजना का निष्पादन करने वाले इन प्रक्रियाओं को आसानी से समझ पाएं।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में सुधार और विशेष रूप से अफ्रीका तथा एशिया में उच्च परियोजना आवश्यकताओं को देखते हुए ये सेमिनार और कार्यशालाएं सभी संबंधित पक्षों को उपयोगी जानकारी प्रदान करती हैं। दोनों सेमिनारों में भारतीय व्यवसाय भागीदारों के लिए दुनिया भर में विभिन्न क्षेत्रों में विद्यमान अवसरों के साथ-साथ नियमों-विनियमों के प्रति सजग रहने संबंधी जानकारियां प्रदान की गईं।

एक्ज़िम बैंक इंजीनियरिंग, परामर्शी सेवाएं, आपूर्ति, प्रोक्योरमेंट, लेखा परीक्षा (ऑडिट), मल्टीडिसिप्लिनरी इंजीनियरिंग, सॉफ्टवेयर, निर्माण, इलेक्ट्रिकल उपकरण, ऊर्जा, कृषि, इंजीनियरी सामान जैसे क्षेत्रों में निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में भारत की योग्यता को प्रदर्शित करने के लिए प्रयासरत है। बैंक, विश्व बैंक, एआईआईबी और एडीबी जैसी बहुपक्षीय संस्थाओं की वार्षिक बैठकों में भी सक्रिय भागीदारी करता है और व्यापार तथा निवेश के क्षेत्रों में सूचनाओं के प्रचार-प्रसार करने वाले ऐसे कार्यक्रमों में नियमित रूप से हिस्सा लेता है।

नई दिल्ली में 'बाहरी सहायता प्राप्त परियोजनाओं में व्यापार अवसर पर चर्चापरक कार्यशाला' का आयोजन।

'एशियाई विकास बैंक के साथ अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय के अवसर' विषय पर बेंगलूरु में सेमिनार।

सफलता की मिसाल: कुमाऊं अर्थक्राफ्ट

अर्थक्राफ्ट उत्तरांचल स्वाश्रयी सहकारी अधिनियम, 2003 के अंतर्गत रजिस्टर्ड एक स्वाश्रयी सहकारी सोसायटी है। इसकी प्रायोजक संस्था है- अवनि, जो भारत के मध्य हिमालयी क्षेत्र में स्थित एक स्वयंसेवी संस्था है और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा वंचित वर्ग की महिलाओं को रोजगार मुहैया कराते हुए उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में काम कर रही है। अवनि का ही एक अर्थ होता है- धरती, जिसे अंग्रेजी में अर्थ कहा जाता है और यहीं से बना है इसका नाम अर्थक्राफ्ट।

अवनि ने कताई करने वालों और बुनकरों के लिए 1999 में एक कार्यक्रम शुरू किया था। इसका मकसद था- परंपरागत शिल्पकलाओं के हुनर को सहेजना और अपने सदस्यों को बेहतर आजीविका प्रदान करना। देखते ही देखते अवनि के टेक्सटाइल कार्यक्रम को उद्यम का दर्जा मिल गया और 2005 में इसे कुमाऊं अर्थक्राफ्ट स्वाश्रयी सहकारी संस्था के रूप में रजिस्टर किया गया। यह सहकारी संस्था आज टेक्सटाइल्स और अन्य प्राकृतिक उत्पादों के निर्यात सहित संपूर्ण व्यवसाय को संभालती है। इसकी अनूठी विशेषता यह भी है कि यह पूरी तरह उत्पादकों के स्वामित्व और प्रबंधन वाली संस्था है, जो स्थानीय महिलाओं को नेतृत्वकारी भूमिका प्रदान कर रही है। इसमें कम शिक्षित और यहां तक कि अशिक्षित महिलाएं भी सक्रिय भूमिका में हैं, जो सामान्यतया एकल महिला परिवारों से आती हैं। अर्थक्राफ्ट के प्रयासों से आज से महिलाएं अपने परंपरागत कृषि संबंधी कार्यों से इतर कुछ अन्य आय कमाने में सक्षम हैं।

अर्थक्राफ्ट नाम की यह संस्था आज (बुने हुए) टेक्सटाइल्स के उत्पादन, प्राकृतिक रंजकों (डाई पाउडर, एक्स्ट्रैक्ट, पिग्मेंट), क्रेयोन्स, वाटरकलर और सोपनट, कुमकुम जैसे लाइफस्टाइल उत्पादों का उत्पादन कर रही है। यहां बेहतरीन रंगों और प्राकृतिक सामग्री से बने उत्कृष्ट और उच्च गुणवत्ता वाले टेक्साइटल्स का निर्माण किया जाता है। टेक्सटाइल्स में प्राकृतिक रंजकों का उपयोग कर अर्थक्राफ्ट ने एक नया व्यवसाय खड़ा किया है, जहां डाई पाउडर, एक्सट्रैक्ट और पिग्मेंट बनाए जा रहे हैं। ये बच्चों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले वाटर कलर पेंट के लिए सुरक्षित हैं। प्राकृतिक डाई के लिए डाई एक्स्ट्रैक्ट और लकड़ी, प्राकृतिक क्रेयोन्स, कॉस्मेटिक्स आदि के लिए पिग्मेंट बनाए जा रहे हैं। अर्थक्राफ्ट द्वारा उत्पादित प्रत्येक उत्पाद पर्यावरण स्नेही (ईको-फ्रेंडली) है और 100% प्राकृतिक है। अर्थक्राफ्ट के 6 उत्पादों को ''यूनेस्को सील ऑफ एक्सीलेंस'' का खिताब भी मिला है।

भारतीय निर्यात-आयात बैंक (एक्ज़िम बैंक) ने लघु एवं मध्यम उद्यमों पर विशेष बल के साथ भावी बाजार प्रवेश व्यवस्था के रूप में ऋण-व्यवस्थाएं (एलओसी) प्रदान करने पर विशेष जोर दिया है। ये ऋण-व्यवस्थाएं भारतीय निर्यातक समुदाय को जोखिम और दायित्व रहित निर्यात वित्तपोषण का विकल्प प्रदान करती हैं, जो उन्हें नए बाजारों में पहुंच बढ़ाने और मौजूदा विदेशी बाजारों में निर्यात बढ़ाने में मदद करती हैं। एक्ज़िम बैंक विदेशी वित्तीय संस्थाओं, क्षेत्रीय विकास बैंकों, संप्रभु सरकारों और अन्य विदेशी संस्थाओं को ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान करता है, जो उन देशों के क्रेताओं को भारत से आस्थगित भुगतान शर्तों पर विकासपरक तथा बुनियादी संरचना परियोजनाओं, उपकरण, माल एवं सेवाओं का आयात करने में समर्थ बनाती हैं। एक्ज़िम बैंक भारत सरकार के आदेश पर भी ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान करता है। इनके अंतर्गत एक्ज़िम बैंक माल के शिपमेंट पर भारतीय निर्यातक को संविदा मूल्य के 100 प्रतिशत की प्रतिपूर्ति करता है, बशर्ते कि कुल संविदा मूल्य के कम से कम 75 प्रतिशत के माल एवं सेवाओं का शिपमेंट भारत से किया गया हो। ऋण-व्यवस्थाओं के जरिए उभरते बाजारों में भारत की परियोजना निष्पादन क्षमता के प्रदर्शन में भी मदद मिली है।

हाल के वर्षों में ऋण-व्यवस्थाओं ने गति पकड़ी है। विशेष रूप से अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका और सीआईएस क्षेत्रों में सबसे ज्यादा ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की गई हैं।

बैंक द्वारा अब तक अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका ओशिनिया और सीआईएस क्षेत्रों के 62 देशों को 23.05 अरब यूएस डॉलर की ऋण प्रतिबद्धता के साथ 238 ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं, जो भारत से निर्यातों के वित्तपोषण के लिए उपलब्ध हैं। इस प्रकार ऋण-व्यवस्थाएं विकासशील देशों में भारत से परियोजनाओं, माल और सेवाओं के निर्यात के संवर्धन और सुगमीकरण के लिए प्रभावी साधन हैं।

मोज़ाम्बिक सरकार को रेल इंजन, रेलवे कोच तथा वैगन सहित रेलवे रॉलिंग स्टॉक की खरीद के लिए 95 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था प्रदान की गई। उक्त ऋण-व्यवस्था सहित एक्ज़िम बैंक द्वारा मोज़ाम्बिक सरकार को भारत सरकार की ओर से अब तक 734.44 मिलियन यूएस डॉलर की 13 ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं। मोज़ाम्बिक सरकार को प्रदत्त इन ऋण-व्यवस्थाओं के अंतर्गत मोज़ाम्बिक में ग्रामीण विद्युतीकरण परियोजनाएं, पानी की बोरिंग तकनीक तथा संबंधित उपकरण हस्तांतरित करने, आईटी पार्क परियोजना, चावल-गेहूं-मक्का का उत्पादन बढ़ाने, सोलर फोटो वोल्टिक मॉड्यूल विनिर्माण संयंत्र लगाने, टिका, बूज़ी तथा नोवा सोफाला के बीच सड़क मरम्मत तथा मोज़ाम्बिक में घरों के निर्माण के लिए सहयोग प्रदान किया गया है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें :

श्री नदीम पंजेतन,
मुख्य महाप्रबंधक,
भारतीय निर्यात-आयात बैंक,
ऑफिस ब्लॉक, टावर 1, 7वीं मंजिल
रिंग रोड के पास
किदवई नगर (पूर्व)
नई दिल्ली - 110023
टेलीफोनः +91-11 24607700
फैक्सः (22) 22823394
ई-मेल : eximloc@eximbankindia.in

सफलता की कहानीः नाइजर

एक्ज़िम बैंक ने भारत सरकार के सहयोग से नाइजर सरकार को 34.54 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था प्रदान की। यह ऋण-व्यवस्था 50 गांवों में सौर विद्युतीकरण और 7 मेगावाट की परियोजना के सौर फोटोवोल्टिक सिस्टम के लिए प्रदान की गई थी। इसमें नाइजर के मालबाजा में 7 मेगावाट के सौर विद्युत संयंत्र के डिजाइन, इंजीनियरिंग प्रोक्योरमेंट और आपूर्ति, परियोजना लगाने, परीक्षण करने और इस संयंत्र को शुरू करने जैसे कार्य शामिल थे। नाइजर के माननीय प्रधानमंत्री श्री ब्रिगी रफिनी ने नवंबर 2018 में इस संयंत्र का उद्घाटन किया।

इस परियोजना के शुरू होने से नाइजर अपनी बिजली जरूरतें स्वयं पूरी कर सकेगा और पड़ोसी देश नाइजीरिया पर उसकी निर्भरता कम होगी। नाइजर की मौजूदा प्राकृतिक स्थितियों में ज्यादा विद्युत उत्पादन संभव नहीं है। इसलिए इसे बिजली के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। लेकिन इस परियोजना के चालू होने से नाइजीरिया से दिन में बिजली लेने की जरूरतें 40 से 50% तक होंगी। इस सौर विद्युत संयंत्र को देश की विद्युत वितरण एजेंसी नाइजेलेक के 20 केवी के मालबाजा-1 सबस्टेशन से जोड़ा गया है। इस सबस्टेशन को 132 केवी / 66 केवी नए सबस्टेशन मालबाजा-2 से आपूर्ति की जाती है। इस संयंत्र से बिजली वितरण कोनी, मादावा और मालबाजा गांवों जैसे आसपास के इलाकों में किया जाता है। मालबाजा में निर्माणाधीन सीमेंट फैक्ट्री में भी इसी विद्युत संयंत्र की बिजली का इस्तेमाल किया जाएगा।

इस परियोजना के चालू होने से स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसरों का भी सृजन हुआ और उन्हें रोजगार मिला। परियोजना चालू होने के बाद इसके रखरखाव के लिए भी रोजगारों का सृजन हुआ। नाइजर सरकार के लिए यह परियोजना विद्युत उत्पादन में आत्म-निर्भरता हासिल करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई है।

नाइजर के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा सौर विद्युत संयंत्र का उद्घाटन

नाइजर में स्थित 7 मेगावाट का सौर विद्युत संयंत्र

विनिर्माण, रसायन सहित अन्य क्षेत्रों में हैं भारतीय कंपनियों के लिए निवेश की खूब संभावनाएं

एक्ज़िम बैंक के शोध अध्ययन में पश्चिम अफ्रीकी क्षेत्र में वर्तमान निवेश परिदृश्य और भारतीय कारोबारियों के लिए इस क्षेत्र में विद्यमान अवसरों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में इस क्षेत्र में पिछले कुछ दशकों में हुए महत्त्वपूर्ण आर्थिक विकास और लगातार होते ऐसे सुधारों का विशेष उल्लेख किया गया है, जिनसे इस क्षेत्र में व्यवसाय की संभावनाओं में सुधार हुआ है। पश्चिम अफ्रीका में निवेश की अच्छी संभावनाओं के बावजूद, सीमापार बाधाओं के चलते वैश्विक अर्थव्यवस्था में इसका योगदान बहुत कम है। वर्ष 2017 में दर्ज किए गए वैश्विक निवेश रुझानों के अनुरूप, पश्चिम अफ्रीका में भी एफडीआई में 10.9 प्रतिशत की गिरावट आई और यह 2016 के 12.7 अरब यूएस डॉलर से गिरकर 2017 में 11.3 अरब यूएस डॉलर रह गया। इस गिरावट की मुख्य वजह नाइजीरिया और घाना में एफडीआई में गिरावट रही, जहां पूरे अफ्रीका के कुल एफडीआई अंतर्वाह का 27.1 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हुआ। कमोडिटी के बेहतर दाम, इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार और उच्च सार्वजनिक निवेश जैसे पहलुओं के चलते 2018 में इस क्षेत्र में एफडीआई कुछ बेहतर रहने की उम्मीद है। 2008 से 2017 के दौरान नाइजीरिया, घाना और कोतदि'वार एफडीआई आकर्षित करने वाले प्रमुख देश रहे हैं। वहीं, क्षेत्रों की बात करें तो कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे क्षेत्रों में सबसे अधिक पूंजीगत निवेश हुआ है। इसके बाद धातु, संचार और वैकल्पिक / अक्षय ऊर्जा का स्थान रहा है। कनाडा, यूके, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, चीन और फ्रांस इस क्षेत्र में सबसे बड़े निवेशक के तौर पर उभरे हैं।

लैटिन अमेरिका और कैरिबियाई क्षेत्र में भारत का निर्यात बढ़ाने के लिए एक्ज़िम बैंक ने चिह्नित किए अवसर

एक्ज़िम बैंक के शोध अध्ययन ''भारत-लैक व्यापारः हालिया रुझान और चुनिंदा देशों में अवसर'' का विमोचन माननीय विदेश राज्य मंत्री जनरल वी. के. सिंह (सेवानिवृत्त), चिली के माननीय पूर्व राष्ट्रपति और एशिया प्रशांत में राष्ट्रपति के विशेष दूत एडुआर्डो फ्रेई रुइज़ टागले द्वारा 1 अक्टूबर, 2018 को सैंटियागो में आयोजित 8वें भारत-लैटिन अमेरिका और कैरिबियाई क्षेत्र (लैक) सम्मेलन के दौरान किया गया।

इस अध्ययन में भारत और लैक के बीच व्यापार के वर्तमान रुझानों का विश्लेषण करते हुए दोनों क्षेत्रों के बीच द्विपक्षीय व्यापार को और बढ़ाने के लिए विद्यमान अवसरों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। अध्ययन में कहा गया है कि भारत और लैक के बीच द्विपक्षीय व्यापार हाल के कुछ वर्षों में महत्त्वपूर्ण रूप से बढ़ा है। दोनों क्षेत्रों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2008 के 17.5 अरब यूएस डॉलर से बढ़कर 2017 में 35.6 अरब यूएस डॉलर हो गया। अध्ययन में द्विपक्षीय व्यापार को और बढ़ाने के लिए उन भारतीय वस्तुओं को चिह्नित किया गया है, जिनका निर्यात इस क्षेत्र को बढ़ाया जा सकता है। साथ ही भारत के व्यापार संतुलन और लैक के व्यापार साझेदार के रूप में भारत की रैंकिंग संबंधी विषयों से जुड़े सुझाव भी दिए गए हैं।

सफलतापूर्वक संपन्न हुआ जी-नेक्ज़िड का तीसरा एक्सचेंज प्रोग्राम

2016 में भारतीय निर्यात-आयात बैंक और 2017 में ब्राजीलियाई विकास बैंक के बाद इस वर्ष इंडोनेशिया एक्ज़िम बैंक द्वारा अक्टूबर 2018 में जी-नेक्ज़िड के तीसरे एक्सचेंज प्रोग्राम का आयोजन किया गया, जो जकार्ता और बाली में उपयोगी विचार-विमर्श के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

जी-नेक्ज़िड का गठन दक्षिण-दक्षिण व्यापार, निवेश और परियोजना निर्यात को सहयोग में निर्यात-आयात बैंकों और विकास वित्त संस्थाओं के बीच समन्वय को सुगम बनाने के उद्देश्य से किया गया था। जी-नेक्ज़िड के तीसरे एक्सचेंज कार्यक्रम का आयोजन इंडोनेशिया एक्ज़िम बैंक द्वारा किया गया। इस एक्सचेंज कार्यक्रम का मकसद प्रतिभागियों को इंडोनेशिया एक्ज़िम बैंक की वित्तपोषण सुविधाओं के साथ-साथ, उन्हें इंडोनेशियाई वित्त मंत्रालय और केंद्रीय बैंक (बैंक इंडोनेशिया) से उपयोगी विचार-विमर्श का अवसर प्रदान करना था।

सैंटियागो, चिली में आयोजित 8वें भारत-लैक सम्मेलन के दौरान एक्ज़िम बैंक के शोध अध्ययन का विमोचन।

पृष्ठभूमि

दुनियाभर की निर्यात ऋण एजेंसियां (ईसीए) या एक्ज़िम बैंक अपने-अपने देशों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने और सुगम बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। अधिकांश देशों में एक्ज़िम बैंकों की स्थापना उनकी संप्रभु सरकारों द्वारा की गई है। इनका मकसद वैश्विक प्रतिस्पर्धी माहौल के अनुरूप अपने देश के निर्यातकों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना है। ये निर्यात ऋण एजेंसियां अपने-अपने देशों के निर्यातों को बढ़ाने में आपूर्तिकर्ता ऋण, क्रेता ऋण, विदेशी निवेश वित्त और ऋण-व्यवस्था जैसे विभिन्न वित्तपोषण कार्यक्रमों के जरिए सहयोग करती हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि निर्यात ऋण एजेंसियां अपने-अपने देश के निर्यातों को बढ़ावा देते हुए सामान्यतः एक-दूसरे की प्रतिस्पर्धी के रूप में काम करती हैं।

एईबीएफ की स्थापना 1996 में भारतीय निर्यात-आयात बैंक की पहल पर एशियाई निर्यात ऋण एजेंसियों के एक अनौपचारिक समूह के रूप में की गई थी, ताकि सुव्यवस्थित तरीके से सूचनाओं और विचारों का आदान-प्रदान किया जा सके। इस फोरम का मुख्य कार्य परस्पर सहयोग को बढ़ावा देते हुए एशियाई एक्ज़िम बैंक फोरम के सदस्यों के बीच दीर्घकालिक व सुदृढ़ संबंध बनाना है। भारत, ऑस्ट्रेलिया, चीन, जापान, मलेशिया, दक्षिण कोरिया और थाईलैंड की निर्यात ऋण एजेंसियां इसके संस्थापक सदस्यों में शामिल रही हैं। इसके बाद, इंडोनेशिया, फिलीपींस और वियतनाम निर्यात ऋण एजेंसियां इसकी सदस्य बनीं और हाल ही में तुर्की ने भी इसकी सदस्यता ले ली है। एशियाई विकास बैंक 1999 से स्थायी पर्यवेक्षक की भूमिका में है।

वार्षिक बैठकें

भारत में आयोजित पहली दो बैठकों में वार्षिक बैठकों को औपचारिक रूप देने और एक कॉमन एजेंडा विकसित करने पर चर्चा की गई। तय हुआ कि बैठक हर वर्ष की जाएगी। बैठकों की मेजबानी बारी-बारी से प्रत्येक निर्यात ऋण एजेंसी द्वारा की जाती है।

बीतते समय के साथ, यह फोरम एशियाई निर्यात ऋण एजेंसियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों के लिए विभिन्न विषयों पर चर्चा करने के लिए एक उत्कृष्ट मंच के रूप में उभरी है। यह फोरम इन एजेंसियों को आपसी सहयोग, सूचनाओं के आदान-प्रदान, अंतः क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देने, वैश्विक वित्तीय संकट और चुनौतियों से निपटने तथा विकास तंत्र, क्षेत्रीय सहयोग और आपसी संपर्क बढ़ाने जैसे विषयों पर विमर्श का मंच मुहैया कराती है। प्रत्येक वार्षिक बैठक में विचारार्थ विषयों की योजना पहले ही बना ली जाती है और बैठक की तारीख आने तक उनकी समीक्षा भी कर ली जाती है, ताकि वर्ष के दौरान विमर्श से निकले कुछ अन्य विषयों को भी उनमें शामिल किया जा सके। उदाहरण के लिए, बढ़ते संरक्षणवाद की पृष्ठभूमि में 2017 की बैठक के दौरान थीम रखी गई थी- ''अंतरराष्ट्रीय व्यापार में मंदी के बावजूद, सदस्य देश अग्रणी विदेश व्यापार और विश्व के आर्थिक वृद्धि वाले क्षेत्रों के भीतर आगामी वर्षों में विश्व व्यापार को लीड करने के लिए बेहतर स्थिति में हैं'' और 2018 के लिए थीम रहीः ''उद्योग 4.0 – एशियाई निर्यात ऋण एजेंसियों की भूमिका और चुनौतियां'', जो वर्तमान समय के अनुकूल और उपयुक्त है।

कौशल विकास

2005 में हुई वार्षिक बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुसार, एईबीएफ ने अपने सदस्यों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ाने के लिए कई मंच बनाए हैं। इसके लिए हर साल बैंकिंग और व्यापार से जुड़े विषयों पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। प्रशिक्षण कार्यशालाओं के लिए विषयों का चयन सावधानीपूर्वक किया जाता है और कार्यशाला की सामग्री भी परामर्श कर डिजाइन की जाती है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य प्रतिभागियों को नवीनतम जानकारियां प्रदान करना तथा सदस्य देशों और आमंत्रित मेहमानों के बीच अपने-अपने अनुभवों को साझा और सूचनाओं के आदान-प्रदान को बढ़ाना है। प्रशिक्षण में सामान्यतया सदस्य देशों की संस्थाओं की फैकल्टी और उद्योग जगत के प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा प्रजेंटेशन दी जाती है और अनुभव साझा किए जाते हैं।

प्रत्येक निर्यात ऋण एजेंसी का अपने देश में अपना एक स्वरूप होता है। किसी अन्य बेंचमार्क के अभाव में अधिकतर इनकी तुलना वाणिज्यिक बैंकों से की जाती है। इसलिए बीते वर्षों में एईबीएफ ने अपने सदस्य देशों के बीच जो समन्वय कायम किया है, संभवतः वही इस संस्था का एक अनूठापन है।

वेबसाइट

एक्ज़िम बैंक ने एईबीएफ और इसकी नई वेबसाइट के विकास में भी योगदान दिया है। यह वेबसाइट हाल ही में एक्सपोर्ट-इंपोर्ट बैंक ऑफ थाईलैंड की मेजबानी में आयोजित वार्षिक बैठक में लॉन्च की गई थी। इस वेबसाइट के विकास का मकसद ऑनलाइन स्पेस में भी प्रतिस्पर्धी मौजूदगी दर्ज कराना, सूचनाओं और अनुभवों को हाथों-हाथ साझा करना, ब्रांड को मजबूत बनाना और सदस्य संस्थाओं के बीच व्यवसाय परिचालनों को आसान बनाना है।

सारांश

एशियाई एक्ज़िम बैंक फोरम अपनी सदस्य संस्थाओं के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ाने और संबंधों को सुदृढ़ करने की दिशा में प्रयासरत है, ताकि एशियाई एक्ज़िम बैंकों के बीच सुदीर्घ संबंध विकसित किए जा सकें। वर्तमान में, एईबीएफ के ग्यारह सदस्य हैं और एशियाई विकास बैंक स्थायी पर्यवेक्षक की भूमिका में है। निर्यात ऋण एजेंसियों को सामान्य तौर पर एक-दूसरे की प्रतिस्पर्धी समझा जाता है, क्योंकि वे अपने-अपने देशों से निर्यातों को बढ़ावा देने की दिशा में काम करती हैं। लेकिन यह फोरम प्रतिस्पर्धा के साथ सहयोग भी प्रदान करती है। दो दशकों तक ''एशियाई फोरम'' रहने के बाद इस संस्था ने ''एक्ज़िम बैंक फोरम'' बनने तक का सफर तय किया है। और इस यात्रा के दौरान गैर-एशियाई निर्यात ऋण एजेंसियों को भी साथ लिया है।

एक्ज़िम बैंक गतिविधियां

एक्ज़िम बैंक भारत की परंपरागत कला और शिल्प को सहेजने और शिल्पकारों को नियमित आजीविका के साधन उपलब्ध कराने के दोहरे उद्देश्य से देशभर के ग्रासरूट उद्यमों और शिल्पकारों को उत्पाद एवं डिजाइन विकास तथा पैकेजिंग के लिए सहयोग प्रदान करता रहा है। बैंक ने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं के जरिए नई पीढ़ी के शिल्पकारों को अपनी परंपरागत शिल्प कलाओं को सीखने और व्यवसाय का मॉडल खड़ा करने के लिए प्रेरित करते हुए विभिन्न शिल्प कलाओं को भारत तथा विदेशों के अनेक बाजारों में स्थापित करने में उनका सहयोग किया है।

एक्ज़िम बैंक ने अपने इन प्रयासों को बढ़ाते हुए सेंटर फॉर माइक्रोफायनेंस एंड लाइवलीहुड (सीएमएल, टाटा ट्रस्ट की पहल) के साथ मिलकर मणिपुर के थौबल जिले में कौना क्लस्टर के शिल्पकारों के लिए डिजाइन विकास प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। इस दौरान सीएमएल के साथ सहयोग ज्ञापन के तहत क्षमता निर्माण कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। ये कार्यशालाएं मास्टर कारीगरों, मध्यावधि, दीर्घावधि डिजाइन कार्यशाला और उत्पाद विशाखन जैसे विभिन्न स्तरों पर आयोजित की जा रही हैं। सीएमएल प्रोग्राम मैनेजर सीएमएल की ही एक कंपनी 'लाइवलीहुड प्रोपल्शन एंड सपोर्ट सर्विसेज' (एलपीएसएस) और ओदेश (ओडीईएसएच) के साथ मिलकर इन कार्यशालाओं का प्रबंधन कार्य देख रहे हैं। साथ ही वे इस कार्यक्रम की समाप्ति के बाद छह महीने तक इस कार्यक्रम में प्रशिक्षित शिल्पकारों के व्यवसाय / रोजगार सृजन में होने वाली प्रगति की भी निगरानी करेंगे, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कार्यशाला का लाभ शिल्पकारों को वास्तविक रूप में मिला है।

एक्ज़िम बैंक अपनी मार्केटिंग सलाहकारी सेवाओं के माध्यम से, भारतीय कंपनियों की निर्यात क्षमताओं और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने के लिए एक संवर्धक की भूमिका निभाता है। बैंक निर्यातकों के लिए विदेशों में अवसरों की पहचान करने और उनके उत्पादों और सेवाओं के लिए विदेशी वितरकों/ खरीदारों/ भागीदारों का पता लगाने में सक्रिय रूप से सहायता कर भारतीय निर्यातक कंपनियों के वैश्वीकरण प्रयासों में उनकी मदद करता है। बैंक ग्रासरूट उद्यमों को कौशल विकास, उत्पाद विकास और निर्यात योग्य उत्पाद तैयार करने के लिए सहयोग प्रदान करते हुए उनका संवर्धन करता है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया mas@eximbankindia.in पर लिखिए।

एक्ज़िमिअस शिक्षण केंद्र की गतिविधियां

एक्ज़िम बैंक ने लैटिन अमेरिका और कैरिबियाई क्षेत्र (एलएसी) में व्यापार और निवेश अवसरों पर सेमिनार का आयोजन किया। इसका उद्देश्य भारतीय निर्यातकों के लिए अच्छी संभावनाओं वाले ऐसे क्षेत्रों की जानकारी देना था, जिन्हें अभी तक भुनाया नहीं गया है और उनमें भारतीय निर्यातकों के लिए व्यवसाय के अच्छे अवसर हैं, क्योंकि उन उत्पादों की लैक क्षेत्र में भारी मांग है। सेमिनार का आयोजन लैटिन अमेरिका के विकास वित्त संस्थाओं के संघ के उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल की यात्रा के दौरान किया गया। लैक क्षेत्र में व्यापार और निवेश की संभावनाओं पर विचार-विमर्श के लिए विभिन्न संबंधित पक्षों को एक मंच पर लाने के उद्देश्य से इस सेमिनार का आयोजन 25 अक्टूबर, 2018 को मुंबई में किया गया। इस अवसर पर एक्ज़िम बैंक ने ''भारत-लैक व्यापारः चुनिंदा देशों में हालिया व्यापार रुझान एवं अवसर'' विषय पर एक कार्यकारी आलेख का विमोचन किया। इस सेमिनार में एलीडे के उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल सहित व्यापार संवर्धन निकायों, भारतीय कंपनियों, राजनयिकों और क्षेत्रीय विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया।

एक्ज़िम बैंक ने ''उत्तर प्रदेश से निर्यातः रुझान, अवसर और नीतिगत परिप्रेक्ष्य'' विषय पर आयोजित सेमिनार के दौरान उत्तर प्रदेश की निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार लाने के लिए अपनी अनुशंसाओं को साझा किया। सेमनार का आयोजन 31 अक्टूबर, 2018 को ग्रेटर नोएडा में किया गया। सेमिनार में सरकार, उद्योग चैम्बरों, डी जी एफ टी, ई सी जी सी एवं एक्ज़िम बैंक के वक्ता शामिल रहे। एक्ज़िम बैंक की एक शोध रिपोर्ट के मुताबिक, राज्य के पास 8 अरब यूएस डॉलर से अधिक की निर्यात संभाव्यता है, जिसका अभी दोहन किया जाना बाकी है। साथ ही 2023 तक राज्य से निर्यात 30 अरब यूएस डॉलर तक के हो सकते हैं, जो अभी 13.8 अरब यूएस डॉलर के हैं। अल्पावधि में, सरकार पशु एवं पशुधन उत्पादों; टेक्सटाइल एवं कपड़े, निर्माण सामग्री; चमड़ा एवं चमड़ा उत्पादों; तथा रत्न एवं आभूषण के निर्यातों पर ध्यान दे सकती है, जहां उत्तर प्रदेश के निर्यात प्रतिस्पर्धी हैं एवं वैश्विक स्तर पर इसकी मांग बढ़ी है। मध्यावधि में, सरकार मशीनरी एवं मशीनरी पुर्जों; इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं; चश्मों, मापन, औषधि एवं इस तरह के औजार एवं पुर्जों; तथा औषधि उत्पादों को बढ़ावा देने पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकती है।

एक्सपोर्ट लीडिंग इंडेक्स

एक्ज़िम बैंक ने वित्तीय वर्ष 2018-19 की तीसरी तिमाही यानी अक्टूबर-दिसम्बर 2018 के दौरान, पिछले वर्ष की इसी तिमाही के मुकाबले भारत के कुल वस्तु निर्यातों में 7 प्रतिशत (77 अरब यूएस डॉलर से 82.39 अरब यूएस डॉलर की वृद्धि) तथा गैर-तेल निर्यातों में 7.2 प्रतिशत (66.65 अरब यूएस डॉलर से 71.45 अरब यूएस डॉलर) की वृद्धि होने का पूर्वानुमान लगाया है। यह पूर्वानुमान एक्ज़िम बैंक के एक्सपोर्ट लीडिंग इंडेक्स (ई एल आई) मॉडल पर आधारित है, जिसमें निरंतर वृद्धि देखी गई है। भारत के कुल वस्तु निर्यातों और गैर-तेल निर्यातों में वृद्धि का पूर्वानुमान हर तिमाही आधार पर संबंधित तिमाही के लिए जून, सितंबर, दिसंबर और मार्च के पहले सप्ताह में जारी किया जाएगा और इस मॉडल में भी निरंतर सुधार का प्रयास किया जाता रहेगा। जनवरी-मार्च 2019 तिमाही के लिए भारत के निर्यातों में वृद्धि का अगला पूर्वानुमान मार्च 2019 के पहले सप्ताह में जारी किया जाएगा।

इस मॉडल तथा इससे प्राप्त पूर्वानुमान संबंधी परिणामों की समीक्षा विशेषज्ञों की एक स्थाई तकनीकी समिति द्वारा की गई है। इस समिति के सदस्यों में प्रोफेसर सैकत सिन्हा रॉय, प्रोफेसर एवं संयोजक, सेंटर फॉर एडवांस स्टडीज, अर्थशास्त्र विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय कोलकाता; डॉ. सरत धल, निदेशक, अर्थशास्त्र और नीति अनुसंधान विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक, कोलकाता; प्रोफेसर एन.आर. भानुमूर्ति, प्रोफेसर, नेशनल इंडस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक फायनेंस एंड पॉलिसी (एन आई पी एफ पी), नई दिल्ली तथा प्रोफेसर सी. वीरामणि, प्रोफेसर, इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च (आई जी आई डी आर), मुंबई शामिल हैं।

अपने शोध प्रयासों की कड़ी में, भारत के निर्यातों का तिमाही आधार पर ट्रैक रखने तथा वृद्धि में पूर्वानुमान के लिए एक्सपोर्ट लीडिंग इंडेक्स (ई एल आई) तैयार करने हेतु विकसित यह एक्ज़िम बैंक का इन-हाउस मॉडल है। यह इंडेक्स देश के निर्यातों पर प्रभाव डालने वाले विभिन्न बाह्य एवं घरेलू कारकों को ध्यान में रखते हुए कुल वस्तु एवं गैर-तेल निर्यातों में तिमाही आधार पर वृद्धि का पूर्वानुमान लगाने के लिए एक प्रमुख संकेतक के रूप में विकसित किया गया है।

केन्या

केन्या की वास्तविक जीडीपी दर 2018 में 5.8% रहने के आसार हैं, जो 2017 में 4.9% थी। जीडीपी में वृद्धि के मुख्य कारकों में कृषि और अच्छा मौसम और पर्टयन, संचार, परिवहन, रियल एस्टेट और खुदरा सहित ज्यादातर सेवा क्षेत्र शामिल हैं। देश की वास्तविक जीडीपी दर के 2019 में खपत बढ़ने और बेहतर निवेश के चलते 2018 के आकलन के समान, 5.8% के स्तर पर बने रहने का अनुमान है। औसत उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति 2018 में कम होकर 5% रहने का अनुमान है, जो 2017 में 8.7% थी। मुद्रास्फीति में यह गिरावट अच्छी वर्षा और बिजली की बढ़ी हुई कीमतों के बावजूद खाद्य पदार्थों के दाम स्थिर रहने के चलते आई है। 2018 के मध्य में बिजली की दरें बढ़ाने और सितंबर 2018 में ईंधन पर 8% वैट सहित कर बढ़ाने के चलते निकट भविष्य में बिजली की कीमतों में गिरावट आने का कोई संकेत नहीं है। परिणामस्वरूप, औसत मुद्रास्फीति के 2018 की 5% की तुलना में 2019 में बढ़कर 6.2% रहने का अनुमान है। केन्या का चालू खाता घाटा 2017 के 5 अरब यूएस डॉलर (जीडीपी का 6.3%) से घटकर 2018 में 4.8 अरब यूएस डॉलर (जीडीपी का 5.4%) आंका गया है। आय और नॉमिनल जीडीपी में वृद्धि के चलते चालू खाता घाटा 2018 में जीडीपी का 5.4%, 2019 में 4.6% और 2020 में 4% रहने का अनुमान है।

पेरू

पेरू की आर्थिक वृद्धि दर निवेशों में बढ़ोत्तरी के चलते पिछले वर्ष के 2.5% से बढ़कर 2018 में 3.7% रहने का अनुमान है। लेकिन अमेरिका-चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार युद्ध और अमेरिका में व्यवसायों में मंदी के आसार पेरू को भी प्रभावित कर सकते हैं। हालांकि पेरू की घरेलू और बाह्य परिस्थिति सामान्यतया अनुकूल ही रहती हैं और 2019-23 के दौरान यहां की वार्षिक औसत वृद्धि दर 3.9% रहने के आसार हैं। पेरू के केंद्रीय बैंक ने मुद्रास्फीति को मध्यम रखने के लिए कुछ उपाय किए हैं और उम्मीद जताई जा रही है कि इससे मुद्रास्फीति को नियंत्रित बनाए रखने में मदद मिलेगी। इन उपायों के तहत यह सुनिश्चित किया जाएगा कि आगामी वर्षों में मुद्रास्फीति 1-3% के बीच बनी रहे। पेरू का चालू खाता घाटा 2018 में बेकाबू हो गया और यह 2017 में जीडीपी के 1.1% की तुलना में 2018 में बढ़कर जीडीपी का 2.2% हो गया। 2019-23 के दौरान चालू खाता घाटा जीडीपी का 2.3% बने रहने का पूर्वानुमान है। यह चालू खाता घाटा एफडीआई आवक पर निर्भर करेगा, जिसके 2019-23 के दौरान जीडीपी का 3.4% रहने का अनुमान है।

कतर

कतर की अर्थव्यवस्था 2017 के 1.6% की तुलना में 2018 में 1.9% की दर से बढ़ने की उम्मीद है। हाल ही में हुए ओपेक करार के अनुसार सीमित तेल उत्पादन और वर्तमान कूटनीतिक संकट के चलते अधिक वृद्धि की उम्मीद कम है। हालांकि, 10 अरब यूएस डॉलर की बहु-प्रतीक्षित बारजान प्राकृतिक गैस विकास परियोजना के शुरू होने से इन नकारात्मक रुझानों के प्रभावों को कम करने में मदद मिलने की उम्मीद है। कतर 2022 में फीफा विश्व कप की मेजबानी करने जा रहा है। ऐसे में सेवा क्षेत्र और विशेष रूप से पर्यटन और परिवहन क्षेत्र से मांग बढ़ेगी। इससे यहां की अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद है। परिवारों की उच्च आय से निजी खपत बढ़ेगी और पूंजीगत परियोजनाओं पर सरकारी खर्च भी बढ़ने की उम्मीद है। इस सबके बीच, 2019-21 के दौरान वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 1.9% बने रहने के आसार हैं। 2022 में यह वृद्धि दर 3.8% रहने और 2023 में घटकर 3.1% रहने का अनुमान है। आर्थिक वृद्धि में आई रुकावट को हटाने के लिए कतरी एलएनजी के 77 मिलियन यूएस डॉलर के निर्यातों को योजनाबद्ध तरीके से बढ़ाकर 110 मिलियन यूएस डॉलर करते हुए नए व्यापार मार्गों के खुलने से वैश्विक अर्थव्यवस्था में इस छोटे से देश की स्थिति और बेहतर होगी। कतर ने कच्चे तेल उत्पादन और निर्यातों के बजाय अपने प्राकृतिक गैस निर्यातों को बढ़ाने पर फोकस करने के लिए हाल ही में ओपेक से हटने का निर्णय लिया था। गौरतलब है कि अन्य ओपेक देशों की तुलना में कतर का कच्चे तेल का उत्पादन 6,00,000 बैरल प्रतिदिन रहा है। उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति 2017 की 0.4% की तुलना में 2018 में 0.8% रही। ओपेक से बाहर जाने का असर उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति पर अधिक नहीं पड़ा और यह 2018 में नियंत्रित स्तर पर बनी रही। तेल की बढ़ती वैश्विक कीमतों का असर आयातों में यूएस डॉलर की मजबूती के चलते अधिक नहीं पड़ा। चालू खाता घाटा 2018 में जीडीपी का 8.7% हो गया, 2017 में जीडीपी का 3.8% था।

उज्बेकिस्तान

उज्बेकिस्तान की आर्थिक वृद्धि दर 2018 में स्थिर बनी रही। वास्तविक वृद्धि दर जहां 2017 में 4.5% थी, वहीं 2018 में 4.6% रही। सोना, कपास और तांबे सहित उज्बेकिस्तान के मुख्य वस्तु निर्यातों की अच्छी कीमतों और नई कर नीति का लाभ उठाते हुए लघु तथा मध्यम उद्यमों में वृद्धि के चलते आगामी वर्ष में 2019-23 के दौरान वास्तविक जीडीपी दर बढ़कर 5.6% होने की उम्मीद है। उच्बेकिस्तान की मुद्रा सोम के अवमूल्यन और घरेलू मांग बढ़ने के चलते 2018 में मुद्रास्फीति उच्च सतर पर रही और 2017 की 14% की तुलना में 2018 में औसतन 18% रहने का अनुमान है। 2019-23 की अवधि के दौरान सोम के अधिमूल्यन के चलते मुद्रास्फीति औसत 10.6% प्रति वर्ष की दर से बढ़ने का अनुमान है। सेंट्रल बैंक ऑफ उज्बेकिस्तान के अनुसार, 2018 की पहली तिमाही में देश का चालू खाता 111.6 मिलियन यूएस डॉलर सरप्लस रहा था, जो दूसरी तिमाही में 1.2 अरब यूएस डॉलर के घाटे में तब्दील हो गया। निर्यात और आयात वृद्धि दर पहली छमाही में अच्छी रही। लेकिन तिसरी तिमाही में निर्यातों में 6.2% वर्ष-दर-वर्ष की गिरावट दर्ज की गई। इससे चालू खाता घाटा और बढ़ेगा। 2018 में चालू खाता घाटा जीडीपी का 5.5% रहने का अनुमान है। हालांकि बढ़ती पूंजी आवक से इसके कुछ कम होने की उम्मीद है।

मुद्रा की प्रवृत्तियां

भारतीय रुपया

भारतीय रुपये के लिए 2018 काफी उथल-पुथल भरा साल रहा और साल के अंत में रुपया औंधे मुंह गिर गया। साल भर में रुपये की कीमत में दशांस हिस्से की कमी आई और अक्टूबर में वैश्विक तेल कीमतें बढ़ने के साथ ही यह 74.4850 के सर्वकालिक निम्न स्तर पर आ पहुंचा, जब । इसी समय अमेरिकी डॉलर की मजबूती और विदेशी निवेश की जावक ने भी इसे प्रभावित किया।

हालांकि दिसंबर तक आते-आते रुपये की स्थिति में कुछ सुधार आया, लेकिन घरेलू और वैश्विक दोनों स्तरों पर जोखिम बने रहने से कभी भी दोबारा गिरावट आने का संशय बना हुआ है और यह बाजार पर निगाह रखने वालों के लिए भी 2019 तक पहेली बना रहेगा।

यूएस फेडरल रिजर्व द्वारा धीरे-धीरे टाइटनिंग की नीति अपनाना और 2019 में तीन बार दरों में बढ़ोत्तरी करने की आशंका भी इसका एक फैक्टर है। यदि फेडरल रिजर्व अपनी दरों में सामान्य टाइटनिंग की नीति को जारी रखता है तो यूएस बॉन्ड यील्ड में मजबूती आएगी और इसका असर हमारी मुद्रा पर भी दिखाई देगा।

अमेरिका-चीन के बीच जारी व्यापार युद्ध और ब्रेक्ज़िट के परिणामस्वरूप इससे अनिश्चितता और बढ़ सकती है। वैश्विक निवेशक किसी भी जोखिम की स्थिति में उभरते बाजार आस्तियों में निवेश करने से कतराएंगे या समुचित प्रीमियम पर केवल लाभदायक अवसरों में ही निवेश करेंगे। किसी भी असामान्य वैश्विक स्थिति से रुपया अछूता नहीं रहेगा।

फिर देश में आगामी आम चुनाव रुपये के लिए प्रमुख चुनौती है। बाजारों को सत्तारूढ़ सरकार के लौटने की उम्मीद है, सीटें भले ही कम हो जाएं। अगर चुनाव के नतीजे कुछ इधर-उधर हुए और गठबंधन कमजोर पड़ा तो बाजार भावना को ठेस पहुंचेगी और रुपया फिर गिरेगा।

कमजोर रुपये से नीति निर्माता भी अप्रसन्न हैं और उन्हें सार्वजनिक रूप से विनम्रता पूर्वक यह मानना पड़ा है कि बाजार ताकतों के अलावा दूसरा कोई गिरते रुपये को संभाल नहीं पाएगा।

ऑस्ट्रेलियाई डॉलर

ब्रेक्ज़िट से लगे झटके, ब्याज दरों में असमानताएं और प्राकृतिक गैस की कीमतों में आए नाटकीय बदलाव। 2018 में मुद्रा की दिशा तय करने वाले ये तीन प्रमुख कारक रहे। लेकिन वैश्विक व्यापार और चीन के साथ विवाद में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की जैसे को तैसे की नीति के चलते दुनिया भर की मुद्राओं को झटका लगा है।

बाजार के निवेशकों में यह आम सहमति थी और है कि व्यापार युद्ध किसी के लिए भी अच्छा नहीं रहेगा। लेकिन मुद्राओं की प्रतिक्रिया काफी अलग-अलग रही।

ऑस्ट्रेलियाई डॉलर को आम तौर पर जोखिम के बैरोमीटर और चीनी तथा वैश्विक आर्थिक वृद्धि के लिए एक विकसित बाजार-प्रॉक्सी के रूप में देखा जाता है। लेकिन 2018 में जी-10 समूह के देशों की मुद्राओं में यूएस डॉलर के मुकाबले ऑस्ट्रेलियाई डॉलर का प्रदर्शन सबसे खराब रहा।

चीन के बुनियादी ढांचे और निर्माण क्षेत्रों में ऑस्ट्रेलिया से निर्यातित लौह अयस्क के इस्तेमाल के चलते ऑस्ट्रेलियाई अर्थव्यवस्था चीन की अर्थव्यवस्था से बुरी तरह उलझी है। वाशिंगटन और बीजिंग के बीच व्यापार युद्ध की चिंताओं में ऑस्ट्रेलियाई डॉलर डूब गया और 2018 में यूएस डॉलर के मुकाबले इसमें 10% की गिरावट आई।

जनवरी में व्यापार वार्ताएं दोबारा पटरी पर आने के कयास लगाए जा रहे हैं और कोई न कोई समाधान हो जाने की उम्मीद जताई जा रही है। लेकिन यदि उत्तरी अमेरिकी व्यापार करार दोबारा वार्ता के दौर में प्रवेश कर गया तो समय लग सकता है, जिसे पहले ही पूरा होने में 15 महीने लग गए। अतः ऑस्ट्रेलिया की मुद्रा भी प्रतीक्षा और आशा में है।

ऑस्ट्रेलियाई डॉलर को प्रभावित करने वाला पहलू सिर्फ ब्रेक्ज़िट ही नहीं है। वैश्विक आर्थिक वृद्धि भी धीमी होने की संभावना है, जिससे ऑस्ट्रेलियाई डॉलर और कमजोर होगा।

वियतनामी दोंग

वियतनामी दोंग में यूएस डॉलर के मुकाबले 2.7% की गिरावट आई। लेकिन यूएस डॉलर में तुलनात्मक रूप से उच्च सरकारी ऋण (लगभग 45%) के चलते इसकी मुद्रा का और अवमूल्यन नहीं हुआ। परिणामतः वियतनाम की वास्तविक प्रभावी विनिमय दर 2.5% रही।

2018 की दूसरी छमाही में ऋण वृद्धि पिछले वर्ष की असी अवधि की 19.5% की तुलना में 17% रही। लेकिन जीडीपी अनुपात में ऋण समग्र रूप से 130% के उच्च स्तर पर बना रहा।

सरकारी आस्तियों की बिक्री और सख्त राजस्व नीति के चलते सरकारी ऋण में वृद्धि हो रही है। लेकिन वियतनाम को अब भी बुनियादी ढांचे और विद्युत उत्पादन जैसे क्षेत्रों में ठोस निवेश की जरूरत है। इसके लिए सरकार को घरेलू निजी क्षेत्र को साथ लेकर चलना होगा और ढांचागत सुधार के जरिए विकास को प्रोत्साहन देना होगा।

वियतनाम दूसरे देशों की तुलना में सुधारों से पीछे छूट गया प्रतीत होता है। विश्व बैंक की 190 देशों की व्यवसाय सुगमता (ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस) रैंकिंग में भी यह 68वें स्थान से 69वें पायदान पर जा पहुंचा।

इस साल व्यापार जगत में हुआ एक अहम घटनाक्रम रहा- नवंबर में कॉम्प्रिहेंसिव एंड प्रोग्रेसिव एग्रीमेंट फॉर ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप (सीपीटीपीपी) को रेटिफाई करना। वियतनाम के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण कदम है, क्योंकि सीपीटीपीपी में सदस्य देशों के लिए टैरिफ दरें घटाई गई हैं और गैर-टैरिफ उपाय किए गए हैं।

इन चुनौतियों के बावजूद, वियतनाम की अर्थव्यवस्था लचीलेपन का प्रदर्शन करती रही। जीडीपी वृद्धि दर 6.8% के आसपास बनी रही, मुद्रास्फीति दर 4% और चालू खाता जीडीपी का 2.2% सरप्लस रहा। वास्तविक मेहनताना 2018 की पहली छमाही में 3.2% की दर से बढ़ा और बेरोजगारी दर 2.2% दर्ज की गई।

वस्तु व्यापार

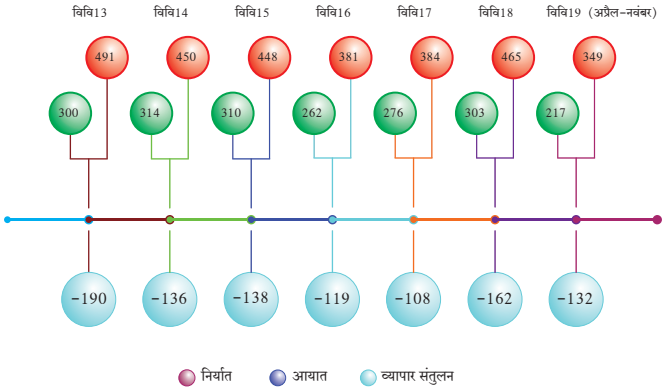

स्रोत: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

सेवा व्यापार

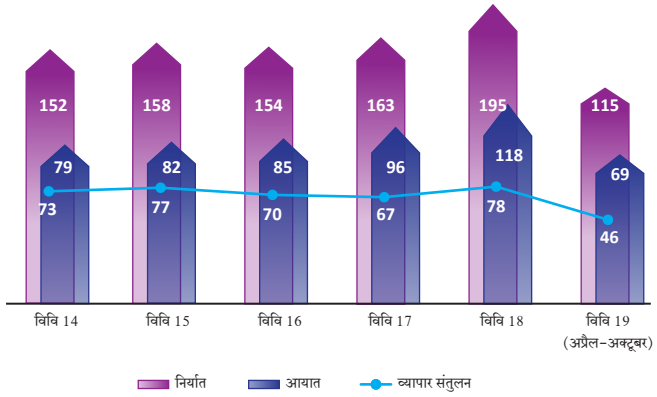

स्रोत: आरबीआई

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह

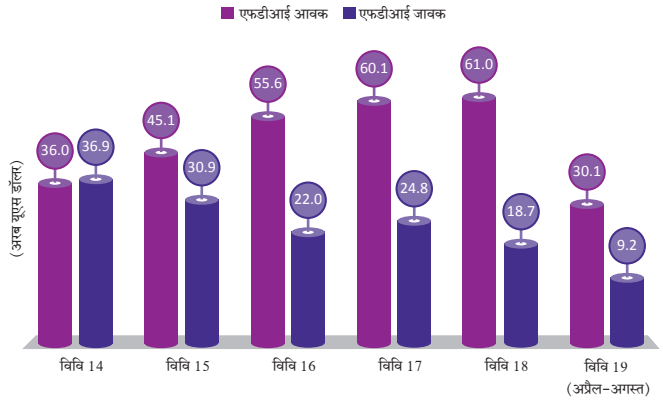

स्रोत: डीआईपीपी और आरबीआई

उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति

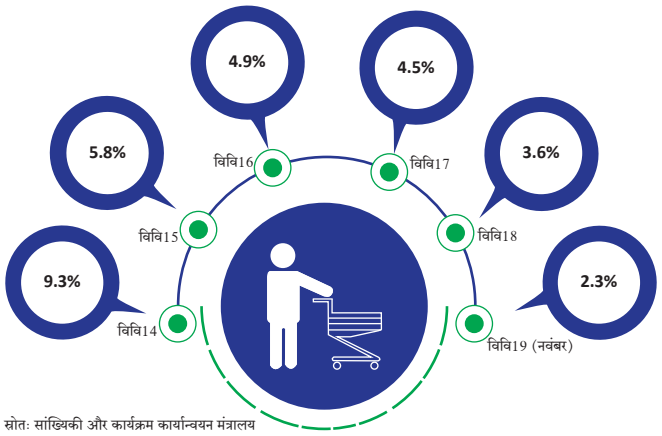

स्रोत: सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

चालू खाता घाटा

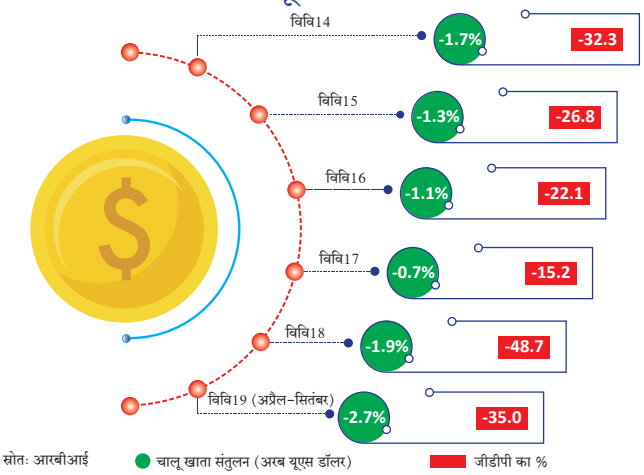

स्रोत: आरबीआई

क्षेत्रवार उत्पादन

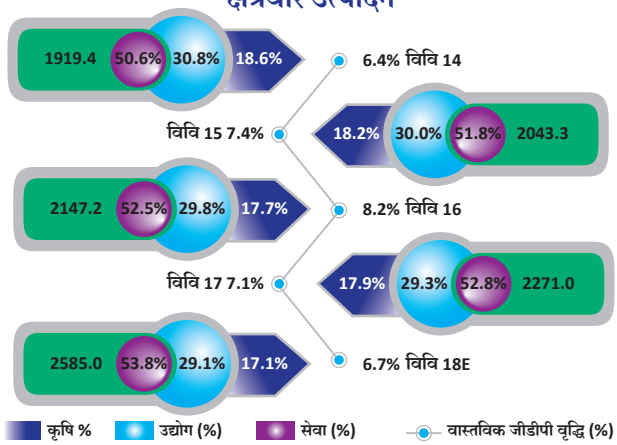

नोट: अ-अनुमानित स्रोत: आईआईएफ एवं सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

व्यापार और भागीदारी अवसर

व्यापार अवसर

प्रौद्योगिकी

आईआईटी मद्रास रूरल टेक्नोलॉजी बिजनेस इन्क्यूबेटर (आरटीबीआई) द्वारा शुरू की गई एक डेयरी प्रौद्योगिकी सॉल्यूशंस कंपनी डेयरी उद्योग के लिए क्लाउड आधारित और मोबाइल आधारित प्रौद्योगिकी मुहैया कराती है।

हैंड-किट

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और वंचित वर्ग की महिलाओं को आजीविका के अवसर प्रदान करते हुए उनके सशक्तिकरण के लिए काम करने वाली एक स्वाश्रयी सहकारी सोसायटी, जो टेक्सटाइल उत्पादन के कार्य में संलग्न है।

जूट के उत्पाद

पर्यावरण स्नेही (इको-फ्रेंडली) गोल्डन और सिल्की शाइन वाले प्राकृतिक फाइबर, 100% बायो-डीग्रेडेबल और रिसाइकल हो सकने वाले जूट बैग की निर्माता कंपनी। जूट बैग ब्रांड निर्माण में परिवर्तन के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण में भी मददगार हैं।

स्वास्थ्य स्वाएं

कैंसर केयर में विशेषज्ञता रखने वाले देश के अग्रणी कर्करोग परामर्शदातों (ऑन्कोलॉजी कंसल्टैंट) में से एक। इसके सभी केंद्रों पर सभी को किफायती दामों पर गुणवत्ता वाली सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

लकड़ी की कटलरी

चम्मच, कांटे, जैसी लकड़ी की कटलरी और पेपर कटर, बालों की क्लिप, लैंपशेड, फोटो फ्रेम, खिलौने जैसे उत्पाद बनाने वाले दस्तकार, जो आज भी इस कला को सहेजे हुए हैं और अपने उत्पादों को व्यापार मेलों और प्रदर्शनियों में प्रदर्शित कर अपनी आजीविका चला रहे हैं।

हथकरघा

ग्रामीण दस्तकारों को स्थायी आजीविका प्रदान करने के लिए उन्हें वैश्विक उपभोक्ताओं से जोड़ते हुए भारत की समृद्ध विरासत को सहेजने में संलग्न एक संस्था। यह संस्था दस्तकारों के शिल्प को तेजी से बदलते शहरी बाजारों में जीवंत बनाए रखने की दिशा में काम करती है।

भागीदारी अवसर

परियोजनाओं में अवसर

(i) कनाडा में एक कंपनी अपने यहां वर्दी के लिए भारी मात्रा में टेलर मेड शर्ट-पैंटों की खरीद करने में इच्छुक है।

(ii) सिएरा लिओन की एक कंपनी कचरे से ऊर्जा उत्पादन के लिए एक संयंत्र स्थापित कराने की इच्छुक है। यह कचरा जैविक, ठोस, द्रव या औद्योगिक भी हो सकता है। भूमि / अन्य आवश्यक नियामकीय मंजूरियों - टेक्नो आर्थिक पैरामीटर को कवर करने वाला आरएफपी जैसे दस्तावेज के संबंध में परियोजना प्राधिकारी विवरण के लिए हमसे संपर्क किया जा सकता है।

इच्छुक पार्टियां हमारे नीचे दिए गए विवरण के अनुसार, मार्केटिंग सलाहकारी सेवाएं समूह से संपर्क कर सकती हैं।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क कीजिए: फोन: 2217 2600, एक्सटेंशन: 2822/2737, फैक्स: 2218 8268, ईमेल: mas@eximbankindia.in